सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस डालर

चेक्क / ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफत व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

नवम्बर, 2011 वर्ष 10 अंक 09

ईदे क़ुर्बां

ईदे कुर्बा आ गई
दिल पर खुशी लो छा गई
हाजी मिना अरफात में
मनहर में और जमरात में
रब से दुआ हैं माँगते
सब का भला हैं चाहते
हम भी नमाज़े ईद में
तक्दीर में तहमीद में
माँगेंगे रब से दिल लगा
सब का भला अपना भला

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 727527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
कहानी एक यात्रा की	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	7
कुर्बानी	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	10
झूटे का गुनाह उसकी गर्दन पर	इदारा	13
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	14
सबसे पहले अपने घरों की इस्लाह कीजिए	मौ0 सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	15
इम्तिहान	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी	16
दादी अम्मा का बकरा	इदारा	20
आदर्श शासक	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	22
ज़िब्हे अज़ीम (महान बलिदान)	ताजुद्दीन अशअर रामनगरी	23
इबादत नाम है रब की इताअत का	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी	25
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों के लिखने में कठिनाइयाँ	इदारा	27
ज्ञान यदि धन के अधीन है तो अज्ञानता है	मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	30
जब्ह का बयान	इदारा	32
सच्चा शिक्षक समाज का अच्छा मार्गदर्शक		33
इन्सान के नैसर्गिक अधिकार और इस्लाम	मौलाना जलालुद्दीन उमरी	34
तुर्की में एक नये युग का आरम्भ	मुहम्मद नफीस खाँ नदवी	37
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	39

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर—ए—बक़रह

अनुवाद : क्या इतना भी नहीं जानते कि अल्लाह को मालूम है, जो कुछ छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं[1], और कुछ उनमें से बे पढ़े हैं कि ख़बर नही रखते किताब की, सिवाये झूटी आरजूओं के और उनके पास कुछ नहीं मगर ख़्यालात[2(78)]। अतः ख़राबी है उनके लिए जो लिखते हैं किताब अपने हाथ से, फिर कह देते हैं कि ये अल्लाह की ओर से है, ताकि लें उस पर थोड़ा सा मोल, अतः ख़राबी है उनके लिए जो अपने हाथों से लिखते हैं, और ख़राबी है उनके लिए जो अपनी कमाई इसके ज़रिए करते हैं[3(79)]। और कहते हैं कि हमको हर्गिज आग न जलाएगी मगर कुछ गिने—चुने दिन[4], कह दो क्या तुम ले चुके अल्लाह के यहाँ से करार कि अब हर्गिज़ खिलाफ न करेगा अपने करार के, या जोड़ते हो अल्लाह पर जो तुम नहीं जानते[5(80)]। जिसने कमाया गुनाह और घेर लिया उसको उसके गुनाह ने[6]। अतः वही हैं नर्क (दोज़ख) में रहने वाले, और वह उसी में हमेशा रहेंगे[(81)]। और जो ईमान लाए और सद्कर्म किये, वही हैं जन्नत में रहने वाले, वह सदैव उसी में रहेंगे[(82)]। और जब हमने लिया क़रार बनी इस्राइल से कि इबादत न करना मगर अल्लाह की और माँ—बाप से अच्छा व्यवहार करना और कुंबा वालों से और अनाथों से और मोहताजों से, और कहो भली बात, और नमाज कायम करो, और ज़कात (धर्मादाय) देते रहो, फिर तुम पलट गए, मगर थोड़े से तुम में, और तुम हो ही फिरने वाले[7(83)]।

तफ़सीर (व्याख्या)

1. अर्थात अल्लाह को उनके समस्त कर्म अथवा कार्य छुपे या खुले बिल्कुल मालूम हैं, वह उनके किताब की समस्त तर्कों की सूचना मुसलमानों को दे सकता है और कभी—कभी तो उसने बता भी दिया है। आयते रज्म को उन्होंने छुपाया मगर अल्लाह ने ज़ाहिर कर उनकी फ़ज़ीहत कराई, ये तो उनके विद्वानों (उलमा) का हाल हुआ जो बुद्धिमान और ग्रन्थों के जानकार थे।

2. और जो अज्ञानी हैं उनको तो कुछ ख़बर नहीं है कि तौरेत में क्या लिखा है मगर कई झूटी बातें जो अपने विद्वानों (आलिमों) से सुन रखी थीं उदाहरणतः स्वर्ग (जन्नत) में यहूदियों के अतिरिक्त कोई न जाएगा और हमारे बाप—दादा हमको ज़रूर बख़्शवा लेंगे, और उनकी आकांक्षाएं वास्तविकता से दूर हैं जिनकी कोई दलील उनके पास नहीं।

3. ये वो लोग हैं जो उन अज्ञानी जनता के भावनानुसार बातें अपनी ओर से बनाकर लिख देते थे और खुदा की तरफ़ उन बातों को जोड़ देते थे, उदाहरणतः तौरेत में लिखा था कि अन्तिम सन्देष्टा (हज़रत मुहम्मद सल्ल0) सुन्दर, घुंघराले बाल, काली आँखें, औसत क़द और सांवले रंग के होंगे। उन्होंने परिवर्तन कर ये लिखा "लम्बा क़द, नीली आँखें, सीधे बाल" ताकि जनता आप सल्ल0 को सन्देष्टा न मान ले और हमारे सांसारिक लाभ में रुकावट न आ जाए।

शेष पृष्ठ .....9 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मुर्दे का कर्ज़ से सम्बन्ध

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि मोमिन (मुसलमान) की जान उसके क़र्ज़ की वजह से अटकी रहती है, जब तक कर्ज़ अदा न किया जाए। (तिर्मिज़ी)

लाश को रोकना मुनासिब नहीं–

हज़रत हसीन से रिवायत है कि हज़रत तल्हा बिन बरा बिन आज़िब रज़ि0 बीमार हुए तो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 उनकी अयादत (मिजाज़पुर्सी) के लिए गए और उनको देख कर कहा कि तल्हा को मैं मौत के मुँह में देखता हूँ। लिहाज़ा मुझको ख़बर देना और जल्दी करना, मुसलमान की लाश के लिए मुनासिब नहीं कि घरों में रोकी जाए। (अबूदाऊद)

क़ब्र के पास वअ़ज़ो नसीहत–

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि हम बक़ीउल ग़रक़द में एक जनाज़े के पास खड़े थे कि इतने में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 आ कर बैठ गए। हम लोग भी आप सल्ल0 के इर्द–गिर्द बैठ गए। आप सल्ल0 के पास एक लकड़ी थी। आपने उस लकड़ी से ज़मीन कुरेदना शुरु किया और कहा कि तुममें से हरेक का ठिकाना लिख दिया गया है कि दोजख या जन्नत। लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! तो फिर हम अपने भाग्य पर भरोसा न कर लें। आप सल्ल0 ने कहा, काम किये जाओ, हरेक व्यक्ति पर वह कार्य सरल है जिसके लिए वह पैदा किया गया। (बुखारी–मुस्लिम)

दफन के बाद कुछ देर ठहरना–

हज़रत उस्मान रज़ि0 बिन अफ्फान कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0, जब मय्यत को दफना दिया जाता तो थोड़ी देर वहाँ ठहरते थे और कहते थे कि तुम अपने भाई के लिए बख्शिश माँगो और उसके लिए साबित कदम रहने का सवाल करो, इसलिए कि इस समय उससे सवाल हो रहा है। (अबूदाऊद)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 ने अपने बेटे से कहा जब तुम मुझको दफन करना तो मेरी क़ब्र के पास इतनी देर ठहर जाना जितनी देर में एक ऊँट ज़िब्ह करके बाँटा जाता है ताकि मैं तुम्हारे कारण मानूस हो जाऊँ और मुझे मालूम हो जाए कि मैं अपने रब के कासिदों को क्या उत्तर देता हूँ। (मुस्लिम)

हज़रत इमाम शाफ़ओ रह0 का कथन है कि क़ब्र के पास कुछ क़ुर्आन पढ़ना मुस्तहब है अगर पूरा पढ़ लिया जाए तो और भी अच्छा है।

मय्यत के लिए सद्क़ा और दुआएं–

"क़ुर्आन"

अनुवादः "वह लोग जो उनके बाद आए, कहते हैं ऐ रब! हमको बख़्श दे, और हमारे उन भाईयों को बख़्श दे जो हमसे पहले ईमान ला चुके"। (सूरः हश्र)

"हदीस"

मय्यत की तरफ से सद्क़ा–

हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि एक आदमी ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से कहा कि मेरी

शेष पृष्ठ .....6 पर

कहानी एक यात्रा की

–डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

1960 ई0 की बात है, मणमांड स्टेशन से लखनऊ आना था, टिकट ले चुका था कि एलान हुआ कि आगे रास्ते में बाढ़ के कारण पुल खराब हो गया है, सारी गाड़ियाँ रोक दी गई हैं। सारे मुसाफिर जो टिकट ले चुके थे, स्टेशन के बड़े हाल में बैठ गये और यह माँग करने लगे कि उनके सफर का कोई बन्दोबस्त किया जाए। इस सिलसिले में लोग कम से कम 12 घण्टे स्टेशन पर पड़े रहे।

उन मुसाफिरों में एक पढ़ा–लिखा खाते–पीते घर का पंडित जोड़ा भी था जो एक कीमती कम्बल बिछाए उस पर बैठा था, उनके करीब ही मैं भी बैठा था, पंडित जी मुझे अच्छी नज़र से न देखते थे, लगता था मेरा उनके पास बैठना उनको ना गवार था, मगर हटा कैसे सकते थे। आखिर उनसे न रहा गया और मुझसे कहा, मुसलमान बड़ा बेरहम होता है, मैंने कहा आपको यह गलत फहमी कैसे हुई? बोले, गलत फहमी नहीं हक़ीकत (वास्तविकता) है, मैंने कहा वह कैसे? बोले, पशुओं को वध करके खा जाता है। मैंने कहा, ऐसा तो बहुत से हिन्दू भी करते हैं। बोले, ऐसा करने वाले सभी निर्दयी और बेरहम हैं। मैंने कहा, हो सकता है, लेकिन पंडित जी! यह बताइए कि क्या जो जीवधारी पैदा होते हैं वह सदैव जीवित रहते हैं या मरते भी हैं? कहने लगे जो जन्म लेता है वह मरता भी है। मैंने कहा, जीवधारियों के मरने के भी सामयिक कारण होते हैं, जैसे कोई बीमारी लग गई, कभी कोई एक्सीडेंट में मरता है, कभी कोई पानी में डूब कर मरता है, कभी कोई जल कर मरता है आदि और कभी कोई अपनी आयु पूरी करके प्राकृतिक रूप से मरता है। फिर मैंने कहा, पंडित जी! यह मरने के कारण कौन पैदा करता है? कहने लगे ईश्वर। मैंने कहा यह प्राकृतिक मौत कौन देता है? कहा ईश्वर। मैंने कहा पंडित जी! फिर तो आप का ईश्वर बड़ा निर्दयी और अत्याचारी है, कहने लगे, ईश्वर को निर्दयी नहीं कह सकते, वह बड़ा दयालू तथा कृपालू है। यह संसार और यह समस्त सृष्टि उसी की रची हुई है, वह जिसे चाहे जीवन दे, जिसे चाहे मौत दे, उसको निर्दयी नहीं कह सकते।

मैंने कहा पंडित जी! आप की बातों से यह नियम निकला कि ईश्वर द्वारा जो कार्य हो वह निर्दयता नहीं है, किसी जीव की जान लेना भी निर्दयता नहीं है। पंडित जी बोले, हाँ हमारा यही मानना है। मैंने कहा पंडित जी अब ध्यान से सुनें!

इस्लाम नाम है अपने आपको ईश्वर के समक्ष पूर्णरूप से समर्पण कर देने का, मुसलमान वही है जो अपने को पूरी तरह ईश्वर को अर्पित करदे, वह उस प्रकार जीवन बिताता है जिस प्रकार उसको उसका ईश्वर आदेश देता है। आप देखें मुसलमान वस्त्र पहनने में स्वतंत्र नहीं है, वस्त्र पहनने में उसके लिए ईश्वरी नियम हैं, वह अक़्ली फलसफा (बुद्धि दर्शन) से नंगा नहीं रह सकता न अर्धनंगा रह सकता है, वह शादी–विवाह में ईश्वरी आदेशों का पाबन्द है, इस प्रकार वह खान- पान में स्वतंत्र नहीं, वह नशा वाली वस्तुओं का सेवन नहीं कर सकता, वह ईशादेश बिना गेहूँ भी नहीं खा सकता।

चोरी का गेहूँ उसके लिए खाना वैसे ही मना है जैसे सुअर का गोश्त खाना। बस यहीं से आप समझें कि वह किसी पशु का माँस भी ईश्वर के आदेश के बिना नहीं खा सकता। उस को कुछ पशुओं का मांस खाने की अनुमति है, वह भी कुछ नियमों के साथ। नियुक्त पशु ईश्वर का नाम ले कर ज़ब्ह किया गया हो, ज़ब्ह करने वाला मुसलमान हो। बहर हाल वह नियुक्त पशुओं को नियुक्त नियमों के अनुसार ज़ब्ह करके खाने का आदेश देता है। अतः वह उन पशुओं को ज़ब्ह करके खाता है, ऐसी दशा में वह निर्दयी कैसे हो सकता है? हाँ! आप यह प्रश्न कर सकते हैं कि एक मुसलमान के पास ईशादेश है या नहीं? अब हमारा कर्तव्य है कि हम सिद्ध करें कि हमारे पास ईशादेश है और हमारा जीवन उसी के अनुसार व्यतीत होता है, और जो मुसलमान कहलाने वाले ईशादेशों की अनदेखी करके मन माना जीवन बिताते हैं वास्तव में वह ऐसे मुसलमान हैं, जिन का सुधार होना चाहिए, यदि उन्होंने अपने जीवन में सुधार करके ईशादेशों को न अपनाया तो मरने के पश्चात कठोर दण्ड भोगेंगे, ऐसा एक मुसलमान का मानना है। पंडित जी मेरी बातों को ध्यान पूर्वक सुन कर प्रभावित हुए और मुझसे अनुरोध किया कि आइये महाशय जी! कम्बल पर आराम से बैठिये। मैं कम्बल पर बैठ गया, फिर वह देर तक पवित्र कुर्आन के विषय में मुझ से प्रश्न करते रहे कि कुर्आन मुसलमानों को कैसे मिला? पंडित जी ने कुर्आने मजीद से मुतअल्लिक कई सवालात किये, यह कैसे और किस प्रकार मुहम्मद साहब पर उतरता था, फिर कैसे सुरक्षित किया जाता? कितने वर्षों में उतरा, कैसे सुरक्षित रहा, कैसे मौलाना लोगों को मिला? मैंने तमाम बातों के जवाबात अपने इल्म के मुताबिक अच्छे ढंग से दिया। "वही" के उतरने के विषय में जो रिवायात में आता है, सब बताया, फिर यह बताया कि "वही" उतरने के तुरंत बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने पढ़े–लिखे साथियों को लिखवा देते। यह कुर्आन मुसलमानों की दीनी रहनुमाई (पथप्रदर्शक) के आवश्कतानुसार 23 वर्षों में उतरा, उस समय बहुत से सहाबा को पूरा कुर्आन हिफ्ज़ था, यह हिफ्ज़ (कंठस्थ करना) का सिलसिला आज तक चला आ रहा है। आज मुसलमानों में लाखों लोग ऐसे हैं जिनको कुर्आन पूरा कंठस्थ है, उनमें एक बड़ी संख्या 10,12 वर्ष के बच्चों की है। मौलाना तो इस्लाम धर्म की शिक्षा प्राप्त करने को कहा जाने लगा, कुर्आन तो आरम्भ ही से सबके लिए रहा, और उस को कुछ न कुछ भाग कंठस्थ करना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य हुआ, नमाज़ हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है और नमाज़ कुछ कुर्आन कंठस्थ किये बिना पढ़ी नहीं जा सकती।

यह बातें हो ही रही थीं कि एलान हुआ कि लखनऊ जाने वाले फलाँ गाड़ी पर सवार हो जाएं, उनको यहाँ से हर्दा स्टेशन पहुँचाया जाएगा, फिर वहां से बस द्वारा होशंगाबाद ले जाया जाएगा, होशंगाबाद से रेल द्वारा झाँसी पहुँचाया जाएगा, झाँसी से वह कानपुर जाएंगे, वहाँ से लखनऊ। हर जगह यही टिकट काम देगा।

मैं पंडित जी से रुख़्सत हुआ, उन्होंने जुदाई पर दुख प्रकट किया और मुझसे मेरा पता लिया कि वह चिट्ठी द्वारा सम्पर्क करेंगे, उस वक्त तक मैं नदवे में न था, घर का पता दिया, मगर उनकी कोई चिट्ठी आज तक न आई। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

माँ अचानक इन्तेक़ाल कर गई और मेरा विचार है कि यदि वह बात करतीं तो सद्का के लिए अवश्य कहती, यदि मैं उनकी ओर से दान (सद्क़ा) कर दूँ तो उनको सवाब मिलेगा? आप सल्ल0 ने कहा, हाँ। (बुख़ारी–मुस्लिम) ❑❑

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफरान नदवी

ग़म का साल— शअ़ब अबूतालिब से रिहाई पाने के बाद कुरैशियों की ओर से तकलीफ़ पहुँचाने का अमल बराबर जारी रहा, अलबत्ता आपके लिए ज़ायद परेशानी इस तौर पर बढ़ी कि आपके बड़े असर वाले चचा अबूतालिब और आपकी बड़ी दिलदारी और हमदर्दी करने वाली अहलिया मुहतरमा हज़रत ख़दीजा की वफ़ात हो गई, (निधन हो गया) यह दोनों आपके निहायत ख़ैर ख़्वाह (शुभचिन्तक) और मुशफ़िक़ (कृपालू) थे, उनका रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ बेहतरीन साथ, अच्छा सुलूक़, वफ़ादारी और मदद व हिमायत का जो मआमला था वह दिन के उजाले की तरह नुमाया था, दोनों का इन्तिक़ाल (निधन) वर्ष 10 नबवी में शअ़ब अबी तालिब से रिहाई मिलने के बाद एक के बाद दीगर हुआ[1]। उनकी वफात का आपके दिल पर निहायत गहरा असर पड़ा, और इस तरह यह साल आपके लिए "आमुल हुज़्न" ग़म का साल बना और आपको अपनी हिमायत और हमदर्दी मिलने के मआमले में फ़िक्रमन्दी बहुत बढ़ गई।

ताएफ़ का सफर—

हुज़ूर सल्ल0 की मक्की ज़िन्दगी में नुबूवत की ज़िम्मेदारी मिलने के शुरु के तीन साल तक मख़फ़ी (गुप्त) कोशिश के बाद दअ़वते इस्लाम के एलान के वक़्त से कुफ़्फ़ार की तरफ़ से ईज़ा रसानी (तकलीफ पहुँचाना) और ज़ुल्म व सितम के जो सख़्त आजमाइशी मवाक़े पेश आए उनसे जिस्मानी ख़तरात और ज़ेहनी परेशानी तो पेश आती थी लेकिन चचा अबूतालिब की तरफ़ से मिलने वाली हिमायत से किसी बड़े वाक़िए का ख़तरा नहीं महसूस होता था, इसके अलावा लोगों की ईज़ा रसानी से तबीयत को जो मलाल (दुख) पेश आता था वह घर में जाकर अहलिया मुहतरमा ख़दीजा रज़ि0 की तरफ़ से तस्कीन की आस से दूर हो जाता था, लेकिन अब अबूतालिब के न रहने से बाज़ संगीन ख़तरात का अन्देशा हो गया था। इस सूरत में आपको ख़्याल आया कि मक्का के हमसर (समवर्ती) शहर ताएफ़ में किसी बड़ी व बाअसर शख़्सियत की हमदर्दी अगर हासिल हो जाए तो दअ़वत के काम में ख़तरात की कमी हो सकती है।

लिहाज़ा आपको किसी मज़बूत ख़ानदान की बड़ी शख़्सियत की हमदर्दी व मदद के हासिल करने की ज़रूरत महसूस हुई, जिसकी बिना पर आपकी नज़र ताएफ़ पर पड़ी, जहाँ के बाअसर ख़ानदान क़बीला सक़ीफ़ की शख़्शियतों में कई एक शख़्शियतें थीं, आपने वहाँ जाकर उनसे बात करने का इरादा किया, और बरवक़्त सफ़र करके वहाँ तशरीफ़ ले गए और वहाँ तीन सरबराहों (जिम्मेदारों) अब्द यालील, मसऊद और हबीब से हक़ की हमदर्दी और हिमायत तल्बी की, लेकिन ख़ुदा को यहाँ भी अपने रसूल के लिए अज़्म व इसतिक़ामत (संकल्प व दृढ़ता) और सब्र व बरदाश्त को ही पसन्द करना था, लिहाज़ा वहाँ के बाअसर लोगों से आपको हमदर्दी नहीं मिली बल्कि उसके विपरीत यह हुआ कि उन्होंने मुसाफिरों के साथ किया जाने वाला अरबी अख़्लाक़ भी आपके साथ नहीं बरता, और कुरैश के मुख़ालिफ़ाना रवैये को बुनियाद बनाते हुए आपके साथ

1. तब्क़ात इब्ने सअ़दः 1/210

हमदर्दी करने पर आमादा नहीं हुए, उनमें से एक ने कहा जो क़ाबे का पर्दा सी रहा था: "क्या तुम को ही ख़ुदा ने पैगम्बर बना कर भेजा है" दूसरे ने कहा "क्या ख़ुदा को तेरे सिवा और कोई नहीं मिला था"? तीसरे ने कहा "मैं बहरहाल तुझसे बात नहीं कर सकता, तू अगर सच्चा है तो तुझसे बात करना अदब के ख़िलाफ़ है और अगर झूटा है तो बात करने के क़ाबिल नहीं", और सिर्फ यही नहीं, बल्कि आम इन्सानों के ख़िलाफ़ शहर के ओबाश (दुराचारी) लोगों को पीछे लगा दिया, उन्होंने आप पर पत्थर चलाए, जिससे आपके क़दम मुबारक लहूलहान हो गए और आप शहर के लोगों से मायूस और ज़ख़्मी होकर निकले और शहर के बाहर बैठ गए[1]।

अदास का क़ुबूले इस्लाम–

वहाँ क़ुरैशी ख़ानदान के कुछ लोगों (उतबा बिन रबीआ व शैबा बिन रबीआ) का बाग़ था, वह बाग़ में इत्तिफ़ाक़न मौजूद थे, आप की बेबसी और ज़ख़्म देख कर बावजूद मुख़ालिफ़ होने के रिश्तेदारी के तक़ाज़े से हमदर्दी का एहसास हुआ और अपने गुलाम "अदास" के ज़रिए अंगूर का एक ख़ोशा (गुच्छा) भेजा, अदास आए और उसको पेश किया, आपने बिस्मिल्लाह कहते हुए तनावुल किया (खाया) तो "अदास" ने "बिस्मिल्लाह" पर तअज्जुब करते हुए पूछा, तो आपने अपने नबी होने का ज़िक्र किया, "अदास" इन्जील की बातें जानते थे, उसकी बिना पर समझ गए कि यह वाकई नबी होंगे, और उनको बोसा (चुम्बन) देने लगे और मुसलमान हो गए और जब अपने मालिक के पास आए तो उन्होंने बुरा भला कहा और उस शख़्स (व्यक्ति) पर एतिबार न करने की हिदायत दी, "अदास" ने उनकी बात ख़ामोशी में टाल दी[1]। हुज़ूर सल्ल0 ने बैठ कर अल्लाह तआला से अपनी परेशानी का ज़िक्र करते हुए दुआ की, आपने अपनी दुआ में भी सिर्फ़ अपनी बेबसी के इज़हार के साथ राहे हक़ में सब्र व बर्दाश्त और रज़ाए इलाही पर इकतिफ़ा करने (प्रयाप्त होना) को इख़्तियार किया था, जिसका इज़हार (प्रकट करना) आपकी दुआ से अच्छी तरह होता है:– (इलाही तेरे ही सामने अपनी कमज़ोरी, बेसरो सामानी, और लोगों की तरफ़ से तहक़ीर (अपमान) का बरताव किये जाने को अपनी परेशानी बयान करता हूँ, तू सब रहम करने वालों से ज़ियादा रहम करने वाला है, दरमान्दा और आजिज़ों (निःसहाय और असमर्थों) का मालिक तू ही है, और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किनके हवाले कर रहा है? क्या किसी ऐसे बेगाने के जो मेरे साथ तुर्श रूई (क्रोध) इख़्तियार करे या किसी दुश्मन के जिसको मुझ पर पूरा क़ाबू हासिल हो गया है लेकिन अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) नहीं तो फिर मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं, लेकिन तेरी तरफ़ से मुझे आफ़ियत (शान्ति) मिले तो मेरे लिए ज़ियादा आसानी है, मैं तेरी ज़ात के उस नूर की पनाह में रहना चाहता हूँ, जिससे सब तारीकियाँ (अंधेरियां) रौशन हो जाती हैं, और जिससे दीन व दुनिया के काम ठीक हो जाते हैं, इस बात के मुक़ाबिले में कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तेरी नाराज़ी मुझ पर वारिद हो, मुझे तो तेरी ही रज़ामन्दी हासिल करने की बराबर फ़िक्र करते रहना है, यहाँ तक कि तू राज़ी रहे, इसके लिए कोशिश करता हूँ, सारी जिफ़ाज़त और ताक़त तेरे ही पास है)।

परदेस में अल्लाह तआला को अपने हबीब की यह कैफ़ियत

---

1. सीरते हलबिया: 2/52

1. सीरते हलबिया: 1/421

देख कर ख़ुसूसी रहम (विशेष दया) आया और ख़ुसूसी मदद की ऐषाकश हुई, और हज़रत जिब्रील अले0 पैग़ाम लाए कि ज़लज़ले के ज़रिए इन ज़ालिमों को तबाह व बरबाद कर देने के लिए फ़रिश्ता तैयार है, आप कहें तो उनको अभी सज़ा देदी जाए, लेकिन आप सल्ल0 ने इस्लाह व इरशाद (सुधार व उपदेश) की मसलहत के आला मेयार (उत्तम आदर्श) को तरजीह देते हुए सज़ा देने की फ़रमाइश नहीं की।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ताएफ़ से वापस हुए तो यह फ़रमाया कि मैं इन लोगों की तबाही के लिए दुआ नहीं करता, अगर यह लोग ख़ुदा पर ईमान नहीं लाए तो क्या हुआ, उम्मीद है कि उनकी आइन्दा नस्लें एक ख़ुदा पर ईमान लाने वाली हों[1]।

रसूलुल्लाह सल्ल0 की ताएफ़ से कामयाबी के बग़ैर वापसी आपके लिए मक्का में और पेचीदगी पैदा करने वाली बात थी कि मक्का से बाहर की किसी शख़्सियत की हिमायत हासिल करने में नाकामी हुई, इससे आपको मज़ीद कमज़ोर और बेसहारा समझते हुए मालूम नहीं कुरैशी अब क्या करें, लिहाज़ा आपको किसी बाअसर मक्की बाशिन्दे के पड़ोस के हासिल करने की ज़रूरत थी, पड़ोस हासिल होने पर आदमी एक तरह से महफ़ूज़ हो जाता है, हज़रत अबू बक्र जब हब्शा की हिजरत से वापस आए थे तो इब्न दग़न्ना के जवार में वापस आए थे, हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल0 ने मुतइम बिन अदी को जो एक ख़ैर पसन्द आदमी थे, इख़्तियार किया और उनका जवार हासिल करके मक्का मे दाख़िल हुए[1]।

इस जवार से आपको किसी सख़्त तरीन मुआमले से बचाव तो एक हद तक मिल गया, लेकिन कुरैश की ईज़ारसानी (तकलीफ पहुँचाने) से महफ़ूज़ नहीं रहे, आपकी क़ौम आपकी मुख़ालिफ़त, दुश्मनी और आप का मज़ाक़ उड़ाने, तकलीफ़ पहुँचाने में जिस तरह अबूतालिब के ज़माने में सरगर्म अमल रही थी उसने उसको क़ाएम रखा बल्कि अबूतालिब जैसी बड़ी और मुअस्सिर शख़्सियत (प्रभावशाली व्यक्तित्व) के बाक़ी न रहने से ज़्यादा सख़्ती और जुरअत जारी रखी।

---

1. ज़ादुल मआद: 1/302, सीरते इब्ने हिशाम: 1/419, इब्ने कसीर: 2/149–153

1. तबक़ात इब्ने सअद: 1/212 ❑❑

कुर्आन की शिक्षा .....

4. कुछ ने कहा सात दिन और कुछ ने कहा चालीस दिन (जितने दिन बछड़े की पूजा की थी) और कुछ ने चालीस साल (जितनी मुद्दत तियह में सर्गरदाँ रहे थे) और कुछ ने कहा हरेक जितनी अवधि तक संसार में जीवित रहा।

5. अर्थात ये बात ग़लत है कि यहूदी सदैव नर्क (जहन्नम) में न रहेंगे। क्योंकि "खुलूद फिन्नार और खुलूद फिल जन्नह का जो सिद्धान्त आगे बयान किया, उसी के अनुसार सबसे मामला होगा। यहूदी उस से निकल नहीं सकते।

6. पाप किसी को घेर ले। उसका तात्पर्य ये है कि, पाप उस पर ऐसा प्रभुत्व ज़मा लेगा कि किसी ओर ऐसा नहीं होगा कि पाप का प्रभुत्व न हो।

7. अर्थात ईश्वरीय आदेश (अहकामे इलाही) की अवहेलना करना तो तुम्हारी प्रवृत्ति बन गई है।

❖❖❖

क़ुर्बानी

—मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

हुक्म— जहाँ क़ुर्बानी पर फ़ुक़्हा (इस्लामी विद्वानों) का इत्तिफ़ाक़ है वहीं उस के हुक्म के बारे में इख़्तिलाफ (मतभेद) है। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक वाजिब और उनके शागिर्द काजी अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद के नज़दीक सुन्नत है। इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद के नज़दीक भी सुन्नते मुअक्किदा है। (अहले हदीस हज़रात के नज़दीक भी सुन्नते मुअक्किदा है, यह जान लेना चाहिए कि इन हज़रात का सुन्नते मुअक्किदा वाजिब जैसा ही होता है) फिर भी क़ुर्बानी के दिनों में उसकी क़ीमत का सद्क़ा कर देने से वाजिब अदा न होगा।

बाज़ क़ुर्बानियाँ तो गरीब और मालदार दोनों पर वाजिब हैं, जैसे नज़्र की क़ुर्बानी, बाज़ सिर्फ मालदारों पर जैसे बक़रईद की क़ुर्बानी या हज्जे किरान या हज्जे तमत्तुअ़ वाले हाजी की क़ुर्बानी। सिर्फ गरीब पर क़ुर्बानी वाजिब होने की शक्ल यह है कि गरीब ने क़ुर्बानी के लिए जानवर ख़रीद लिया तो अब उस पर इस जानवर की क़ुर्बानी वाजिब हो गई।

शर्तें— क़ुर्बानी ज़रूरी होने के लिए शर्त यह है कि क़ुर्बानी करने वाला मालदार (यानी साहिबे निसाब) हो।

अगर काश्तकार है और उसकी ज़मीन से इतना गल्ला मिल जाता है जिससे उसकी और उसके मोतअल्लिकीन की साल भर की ख़ुराक चल जाती है तो उस पर भी क़ुर्बानी ज़रूरी है। क़ुर्बानी वाजिब होने के लिए मुसलमान होना, नीज़ आकिल—बालिग होना भी ज़रूरी है। मुसाफिर पर क़ुर्बानी वाजिब नहीं, अगर हाजी क़ुर्बानी के दिनों में मक्का मुकर्रमा में पन्द्रह दिन का क़ियाम कर रहे हैं तो उन पर बक़रईद वाली क़ुर्बानी भी वाजिब है, वर्ना मुसाफिर होने के सबब हाजियों पर बक़रईद वाली क़ुर्बानी वाजिब नहीं। यदि कोई पहले गरीब था, क़ुर्बानी वाजिब न थी लेकिन क़ुर्बानी के दिनों में मालदार हो गया, यहाँ तक की 12 जिलहिज्जा को गुरूब से पहले मालदार हो गया तो उस पर भी क़ुर्बानी वाजिब हो गई, इसी तरह कोई काफिर मालदार क़ुर्बानी के दिनों में मुसलमान हो गया तो उस पर भी क़ुर्बानी ज़रूरी हो गई।

जानवर और उनकी उम्रें—

चार तरह के जानवर हैं जिन की क़ुर्बानी की जा सकती है।

1. ऊँट और ऊँटनी जो पाँच साल का हो।
2. भैंस और भैंसा इनकी उम्र दो साल होनी चाहिए।
3. बकरी, बकरा (इसी के हुक्म में मेन्ढा और दुम्बा भी हैं) उनकी उम्र एक साल होनी चाहिए।
4. भेंडा, भेंड़ी इनकी उम्र भी एक साल होनी चाहिए।

हमारे मुल्क में मौजूदा हालात में गाय की क़ुर्बानी नहीं करनी चाहिए।

इन जानवरों की क़ुर्बानी दुरुस्त नहीं— सींग जड़ से टूट गई हो, अंधा हो, काना हो, इतना लंगड़ा हो कि क़ुर्बान गाह तक न जा सके, बहुत ज़्यादा मरीज व दुब्ला हो, दोनों कान कटे हों, पूरी दुम कट गई हो, पैदाइशी तौर पर कान न हों, एक ही कान हो,

दूसरा कान पैदाइश ही से न हो या कट गया हो, कोई भी अंग एक तिहाई या उससे ज़्यादा कट गया हो, या कटा हो।

इन ऐबों के साथ कुर्बानी हो सकती है– दाँत न हों मगर चारा खा सकता हो, खुजली वाला जानवर जब कि वह मोटा हो, जिसको पैदाइशी सींग न हो, या सींग टूट गयी हो, मगर जड़ से ना टूटी हो, कान बहुत छोटा हो, कान में छेद हो, कान लम्बाई में फटा हो, ऐसा लंगड़ा जो अपना पाँव टेक कर चल सकता हो। कुर्बानी का जानवर सेहतमन्द होना चाहिए।

कुर्बानी के दिन और वक्त–

इमाम अबू हनीफा, इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हंबल के नज़दीक दस जिलहिज्जा की बक़रईद की नमाज़ के बाद से 12 जिलहिज्जा को सूरज डूबने से पहले तक कुर्बानी दुरुस्त है, इमाम शाफई के नज़दीक 13 जिलहिज्जा तक कुर्बानी की जा सकती है, अहले हदीस हज़रात के नज़दीक भी 13 जिलहिज्जा तक कुर्बानी की जा सकती है। रात में भी कुर्बानी की जा सकती है।

कुर्बानी में शिर्कत– बड़े जानवर जैसे ऊँट, भैंसा, भैंस में सात लोग शरीक़ हो सकते हैं। बड़े जानवर में सात से कम लोग शरीक़ हों जैसे पाँच या चार तब भी दुरुस्त है, यहाँ तक की बड़ा जानवर कोई अकेला भी कर सकता है, लेकिन अगर बड़े जानवर में सात से ज़्यादा लोग शरीक़ होंगे तो किसी की भी कुर्बानी न होगी अलबत्ता गोश्त हलाल रहेगा। कुर्बानी के जानवर में अक़ीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है।

कुर्बानी का गोश्त और उसका चमड़ा– अच्छा यह है कि कुर्बानी के जानवर के गोश्त के तीन हिस्से किये जाएं, एक हिस्सा अपने घर वालों के लिए रखें दूसरा हिस्सा मालदार अजीज़ों पर खर्च करें और तीसरा हिस्सा गरीब व नादार भाइयों पर खर्च करें, फिर भी ज़रूरत और हालात के लिहाज से इस तक्सीम में कमी बेशी हो जाए और पूरा जानवर किसी एक ही मद में इस्तेमाल कर लिया जाए तो भी कोई कराहत नहीं, यही हुक्म कुर्बानी की ख़ाल का भी है कि चमड़े को खुद भी इस्तेमाल कर सकतें हैं, मालदारों को भी खाल दे सकते हैं और गरीबों को भी, लेकिन जानवर का कोई भी हिस्सा गोश्त, पाया, कल्ला, चमड़ा बेच दिया जाए तो अब उस क़ीमत को सद्क़ा कर देना वाजिब है और अब सिर्फ ग़रीब ही उसके हकदार हैं। इसी तरह उजरत में भी कस्साब को जानवर का गोश्त या खाल या कोई हिस्सा देना जाइज़ नहीं, ज़रूरी है कि गोश्त बनाने काटने की उजरत अलग से दी जाये। कुर्बानी की खाल की रक़म तनख़्वाह, मस्जिद और मदरसों की तामीर वगैरह में खर्च नहीं की जा सकती ऐसे मदरसे जहाँ नादार तलबा के खाने का इन्तिजाम न हो, वह मदरसे उसके हक़दार नहीं हैं।

कुर्बानी की कज़ा– अगर कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी न की जब कि कुर्बानी उस पर वाजिब थी तो बाद में उस पर कज़ा वाजिब होगी, अगर खुशहाल आदमी था और कोई जानवर उसने कुर्बानी की नीयत से नहीं लिया था तो कज़ा की दो सूरतें हैं या तो ज़िन्दा जानवर ख़रीद कर सद्क़ा करदे या उसकी क़ीमत सद्क़ा करदे, और अगर मालदार या गरीब आदमी ने कोई जानवर कुर्बानी की नीयत से खरीद लिया या किसी जानवर के मुतअल्लिक़

कुर्बानी की नज़्र मानी थी मगर कुर्बानी के दिन गुज़र गये और जानवर ज़ब्ह नहीं किया गया तो अब उसी जानवर का सदक़ा कर देना वाजिब है, अब वह गरीबों ही का हक़ है। अगर कोई मालदार कुर्बानी का जानवर खरीदे और वह कुर्बानी के दिनों में खो जाए तो वह उसकी जगह दूसरा जानवर ज़ब्ह करदे, बाद में वह अस्ल जानवर मिल जाए तो उसकी कुर्बानी वाजिब नहीं, लेकिन अगर कोई गरीब (जिस पर कुर्बानी वाजिब न थी) उसके साथ यही मामला हो और फिर उसको खोया हुआ जानवर मिल जाए तो उसको ज़ब्ह करना ज़रूरी होगा।

कुछ आदाब व अहकाम– मुस्तहब तरीका यह है कि कुर्बानी के जानवर को कुछ पहले से अपने यहाँ ला कर बाँधा जाए, उसके गले में पहचान के लिए पट्टा डाल दिया जाए। उसके ओढ़ने का नज्म किया जाए, कुर्बानी करने की जगह नर्मी से ले जाया जाए, कुर्बानी के बाद उसकी रस्सी पट्टा वग़ैरह को सद्क़ा कर दिया जाए, उसके बाल न काटे जाएं, दूध न दुहा जाए, दूहना ज़रूरी हो तो दूध दूह कर सद्क़ा कर दिया जाए। बेहतर है कि जानवर को खुद ज़ब्ह करे। जानवर को किब्ला रुख़ इस तरह लिटाए कि ज़ब्ह के वक़्त ज़ब्ह करने वाला भी किब्ला की जानिब मुँह कर सके, फिर कुर्बानी की दुआ पढ़े और जिस की तरफ से कुर्बानी कर रहा हो उसका नाम ले, अगर कोई शरीक हो तो सबका नाम लेकर कहे कि उनकी तरफ से कुर्बानी करता हूँ, यह नाम और कुर्बानी का इरादा जानवर लिटाने से पहले भी लिया जा सकता है, फिर बिस्मिल्लाहि व अल्लाहु अक़बर कह कर जानवर ज़ब्ह कर दे, और कहे, ऐ अल्लाह! इस कुर्बानी को क़बूल फरमा। यहाँ अरबी अल्फाज़ भी पढ़े जा सकते हैं "अल्लाहुम्म तकब्बल मिन्नी कमा तक़ब्बल्त मिन ख़लीलिक इब्राहीम व मिन हबीबिक मुहम्मदिन अलैहि मस्सलातु वस्सलाम"। अगर दूसरों की तरफ से कुर्बानी कर रहा हो तो बजाये मिन्नी के मिन फुलां कहे यानी मिन्नी के बजाए उसका नाम ले और अगर उसकी कुर्बानी में दूसरे भी शरीक हों तो मिन्नी व मिन फुलां कहे। याद रहे अगर कुर्बानी के पहले व बाद वाली दुआएं याद न हों या पढ़ न सके तो अपनी तरफ से या जिसकी तरफ से कुर्बानी कर रहा है कुर्बानी की नीयत करके बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कर कर ज़ब्ह करदे कुर्बानी हो जाएगी। अगर कई लोगों की तरफ से कर रहा है तो सबकी तरफ से नीयत करले। कुर्बानी का इरादा हो तो जिलहिज्जा का चाँद देखने के बाद ही से बाल और नाखून काटना छोड़ दे, यह मुस्तहब है। जिस शख़्स का इन्तिक़ाल हो चुका है, उसकी तरफ से भी कुर्बानी की जा सकती है, हुज़ूर सल्ल0 की जानिब से भी कुर्बानी की जा सकती है, कुर्बानी के सात हिस्सों में से कोई एक हिस्सा हुज़ूर सल्ल0 की तरफ से कुर्बानी करे तो बहुत अच्छी बात है लेकिन इस हिस्से में कई लोग शरीक हों जैसा की बाज जगहों पर रवाज़ है तो किसी की भी कुर्बानी न होगी।

कुर्बानी से पहले वाली दुआ, जानने वाले से सीखना चाहिए। मदद के तौर पर हिन्दी में भी लिखी जा रही है। "इन्नी वज्जहतु वज्हिय लिल्लज़ी फतरस्समावाति वल्अर्ज़ हनीफव् वमा अना मिनल मुश्रिकीन, इन्न सलाती वनुसुकी व महयाय वमातीलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन, ला शरीक लहू व बिज़ालिक उमिरतु व अ न मिनल मुस्लिमीन"।

❑❑

झूठे का गुनाह उसकी गर्दन पर

—इदारा

एक साहब ने बयान किया कि एक आमिल थे वह जिन्न उतारते और जिन्न कैद कर लेते थे। उनके गाँव से 8 किलो मीटर पर एक दूसरे गाँव में एक औरत पर जिन्न का असर बताया जाता था। उसके घर वाले आमिल साहब के पास आए और हाल बता कर आमिल साहब को अपने साथ ले गये। आमिल साहब ने औरत को देख कर कहा हाँ! इस पर जिन्न है, जिन्न उतारने और कैद करने का खर्च बताया, जिसे घर वालों ने अदा कर दिया। आमिल साहब ने अमल शुरु किया, यहाँ तक कि जिन्न को बोतल में बन्द कर लिया। जिन्न ने आमिल साहब से कहा हुजूर! मेरी एक बड़ी ज़रूरत है, मुझे एक मिनट के लिए छोड़ दें, मैं एक मिनट के बाद हाजिर हो जाऊँगा। आमिल साहब ने हजरत सुलेमान की कसम लेकर एक मिनट के लिए छोड़ दिया, जिन्न एक मिनट बाद हाजिर हो गया, आमिल साहब ने फिर उसे बोतल में कैद कर लिया और किसी कब्रिस्तान में दफन करके अपने घर रवाना हुए। रास्ते में उनके घर से आता हुआ एक आदमी मिला, उसने कहा गज़ब हो गया, आप की बीवी खाना पका रही थीं, आपका बच्चा पास ही खेल रहा था कि अचानक बच्चे ने अपना सर चूल्हे में डाल दिया और वह जाता रहा। आमिल साहब ने लम्बी साँस खींची और कहा, कमबख्त ने एक मिनट में मुझसे बदला ले लिया, मगर अब क्या हो सकता है, अब तो तीर कमान से निकल गया, अगर मैं उससे इस बात की भी कसम लिये होता कि मुझे कोई नुकसान न पहुँचाओगे तो यह घटना न होती, अब तो सब्र के सिवा कोई चारा नही, अलबत्ता अब उसको कब्रिस्तान से निकाल कर जलाऊँगा। प्रिय पाठकों! याद रखो, यह निरा झूठ है। अपना कारोबार चलाने के लिए किसी आमिल ने यह किस्सा गढा है ताकि इस को सुनकर अपनी मुश्किलात में आमिल साहब के जाल में फँस सकें।

याद रहे! कुर्आन व हदीस में कोई ऐसा अमल नही है कि किसी जिन को कैद किया जा सके या उसे जलाया जा सके। जहाँ बाज उलमा ने बाज आयात के माना के लिहाज से यह कहा है कि इसको पढ़ने से शैतान व जिन्न के शर से बचा जा सकता है, बाज दुआएं भी ऐसी हैं जिन्हें पढ़ कर जिन्न व शैतान के शर से बचा जा सकता है। यह भी हो सकता है कि बाज उलमा ने नफ्सियाती इलाज के लिए मरीज़ को यकीन दिलाया हो कि मैंने तुम को सताने वाले जिन्न को कैद कर लिया, अब तुम ठीक हो। मगर यह बात बिल्कुल गलत है कि किसी अमल से कोई जिन्न कैद किया जा सकता है, अलबत्ता कुर्आन व हदीस से अलग कोई शिर्किया और शैतानी अमल से कोई करतब तो दिखाया जा सकता है मगर किसी जिन्न को कैद नहीं किया जा सकता।

यह भी याद रहे कि हमारे हुजूर सल्ल० की आमद की बरकत से अब कोई जिन्न न तो किसी ईमान वाले को ले जा सकता है और न आग वगैरह में ढकेल सकता है।

□□

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

प्रश्नः एक शख़्स पर कुर्बानी वाजिब थी, मगर किसी वजह से वह कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी न कर सका, जिस पर उसको बहुत अफ्सोस और रंज है, अब वह क्या करे?।

उत्तरः एक बकरा या बकरी की कीमत सदका करे, इन्शाअल्लाह इस कोताही का बदल हो जाएगा। लेकिन कुर्बानी के दिनों का जो सवाब है वह न मिल सकेगा।

प्रश्नः पतलून पहन कर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ हो जाती है या नही? एक साहब का कहना है कि पतलून में नमाज़ नहीं होती।

उत्तरः जिस कपड़े से सत्रे औरत हो जाए, यानी जिस्म का वह हिस्सा जिनका छुपाना जरूरी है छुपे हों तो नमाज़ हो जाएगी, चूंकि पतलून से सत्रे औरत हो जाता है, इसलिए पतलून पहन कर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ हो जाएगी, अलबत्ता अगर पतलून ऐसी टाइट हो कि छुपाए जाने वाले अंगों की ऊँचाई या गहराई जाहिर होती हो, जो कि देखने में भी बहुत खराब लगता है, ऐसी पतलून को पहन कर नमाज़ पढ़ना मकरूह है, लेकिन कोई शख़्स ऐसे टाइट पतलून में है और नमाज़ का वक्त आ गया तो उसको नमाज़ न छोड़नी चाहिए बल्कि नमाज़ अदा करनी चाहिए और उसको चाहिए कि ढीली ढाली पतलून पहना करे।

प्रश्नः कुर्बानी का गोश्त सुखा कर रख ले और साल भर तक बतौर बरकत के जब तब खाया करे कैसा है?

उत्तरः कुर्बानी का गोश्त सुखा कर रख लेने और बाद में खाते रहने में कोई हरज नहीं। आज कल तो लोग फ्रिज़ में रख कर खाते हैं इसमें भी कोई हरज नहीं।

प्रश्नः एक शख़्स न हकीम है और न डॉक्टर, उसने एक दमा वाले मरीज को बताया कि अगर तुम कुर्बानी वाले बकरे का खून जो ज़ब्ह के वक्त बहता है पी लो तो तुम्हारा दमा ठीक हो जाएगा। लेकिन कुर्बानी करने वाले मौलवी साहब ने उसे ऐसा करने से रोक दिया, कुर्बानी के जानवर का खून पीना कैसा है ?

उत्तरः ज़ब्ह के वक्त जो खून बहता है वह नजिस है, उसका पीना हराम है, वह कपड़े में लग जाए तो उसका धोना ज़रूरी है। जिन साहब ने खून पीने का मशवरा दिया, बहुत ग़लत दिया, ज़ब्ह करने वाले ने खून पीने से बचा लिया, बहुत अच्छा काम किया।

प्रश्नः कुर्बानी का गोश्त हिन्दू भाईयों को देना कैसा है?

उत्तरः बेहतर यही है कि कुर्बानी का गोश्त अपने मुसलमान भाईयों को दिया जाए, लेकिन अगर ज़रूरत समझें तो कुर्बानी का गोश्त हिन्दू भाईयों को देने में कोई हरज नहीं है।

प्रश्नः पड़वा छोटा है, कसाई जो उसे खरीद कर लाया है, कहता है कि दो साल का है, ऐसे में क्या उसे कुर्बानी में ज़ब्ह किया जा सकता है?

उत्तरः उसके दाँत देखे जाएं, अगर सामने के दो दाँत दूध के दाँत की जगह निकल आए हैं तो उसकी कुर्बानी हो सकती है, वरना

शेष पृष्ठ .....19 पर

सबसे पहले अपने घरों की इस्लाह कीजिए

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

घर में सुधार कैसे हो? यह सवाल इस वक़्त हर तरफ हो रहा है। किसी भी क़ौम के लिए यह बड़े नुक़सान की बात है कि उसके घरेलू मुआमलात बिगड़ जायें, क्योंकि क़ौम सड़कों या बाजारों में नहीं बनती और न बड़े–बड़े जलसों और कान्फ्रेंसों में उसकी ज़ेहनी व क़ल्बी तशकील होती है। यह जलसे दर अस्ल एक कुव्वत बख़्श टॉनिक की हैसियत रखते हैं। लेकिन टॉनिक भी उस को फायदा पहुँचाता है जो सेहतमन्द हो।

सही घरेलू तरबियत और माहौल ही वह असल शै है जो किसी भी इन्सान को कुन्दन बनाता है और अगर घरेलू माहौल बेहतर नहीं है तो आप बाहर कुछ नहीं कर सकते। जो आदमी फसादे खून का शिकार हो उसके ऊपरी बदन पर किसी मरहम के लगाने से उसको सेहत नसीब नहीं होगी। इलाज फसादे खून का ही करना होगा। इसी तरह हमको सब से पहले इस की फिक्र करनी चाहिए कि हमारे घर मग़रिबियत, फैशन परस्ती और लादीनी असरात से पाक हों। हम अगर अपने घरों में रेडिया पर गानें सुनते हैं, टेलीविज़न पर नश्र होने वाले हर तरह के प्रोग्राम देखते हैं और अपने बच्चों को मग़रिबियत की तअ़लीम दिलाते हैं और उनकी दीनी तअ़लीम की फिक्र नहीं करते हैं तो फिर हम यह उम्मीद किस तरह कर सकते हैं कि आने वाली नस्ल बेहतरीन मुसलमान और मुफीद इन्सान बन सकेगी और किस तरह हमारा घर पाक व साफ रह सकेगा और किस तरह हमारे बच्चों को माओं की वह गोद मिल सकेगी जिसमें पल कर इमाम हसन बसरी रह0, सुफियान सौरी रह0, इमाम बुखारी रह0, इमाम अबू हनीफा रह0, इमाम मालिक रह0, इमाम शाफई रह0, इमाम अहमद बिन हम्बल रह0 और लातअ़दाद उलमाँ, शुहदा और मुजाहिद तैयार हुए।

जो माहौल इस वक्त हमारे घरों का है उसके नतीजे में तो फिल्मी अदाकार, नाचने–गाने वाले और बाज़ारी क़िस्म के लोग ही मिल्लत को नसीब हो सकते हैं।

इसलिए हम को सबसे पहले अपने घरों की इस्लाह करनी चाहिए और एक तूफान जो अपने अन्दर बुराईयों और फसाद की आग लिए हुए है और हमारा मुआशरह जिस की ज़द में है, इसको रोकने के लिए पूरी तन्मयता के साथ मैदान में आना होगा, वरना अगर हम इसी तरह नींद का मज़ा लेते रहे तो ख़ुदानख़्वास्ता वह वक़्त जल्द आ जाएगा कि हमारी यह नई नस्ल इस्लामी वजूद और दीनी तशख़्ख़ुस को खो बैठेगी और हम उन तमाम नेअ़मतों से महरूम हो जायेंगे जो अल्लाह तआ़ला ने हमको अता फरमाई है। ❑❑

इम्तिहान

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

एक शेरनी अपने नवजात बच्चों से खेल रही है। एक नर्म–मुलायम बच्चे को अपने बन्द पंजे से दबोच लेती है, और उसकी गर्दन अपने मुँह में लेती है, लगता है कि बच्चे की जान गई, लेकिन उसे वह छोड़ देती है, बच्चा ज़रा भी खौफ़ज़दा (भयभीत) नहीं होता, छूटते ही शेरनी को छेड़ता है, और इशारा देता है कि माँ फिर उसी तरह करे, और शेरनी फिर उसी तरह करती है, इस खौफ़नाक अमल से माँ बेटे लुत्फ अंदोज़ होते हैं। अल्लाह वालों की आजमाइश पर कोई मिसाल चस्पा नहीं हो सकती, लेकिन इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि शेरनी के बच्चे की तरह अल्लाह वाले अपनी आज़माइश पर लुत्फ अन्दोज़ होते हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब क़ौम को अल्लाह की तरफ बुलाते हैं और तौहीद की तअ़लीम देते हैं तो क़ौम मुखालिफत करती है, बाप भी मुखालिफ हो जाता है, वक्त का बादशाह भी मुखालिफ हो जाता है, आग का एक बहुत बड़ा अलाव जला कर हज़रत इब्राहीम अ0 को उस अलाव में फेंक दिया जाता है, लेकिन आग को हुक्म होता है कि वह इब्राहीम अ0 पर ठण्डी और सलामती वाली हो जाए। आग आप पर ठण्डी और सलामती वाली हो जाती है। मगर न कोई व्यक्ति ईमान लाता है न बादशाह, बाप तो पहले ही घर से निकाल चुका है।

रिवायत से मालूम होता है कि जब आपको आग में डाला गया उस वक्त आप की उम्र सोलह वर्ष की थी। तफ्सीरी रिवायतों से पता चलता है कि हज़रत लूत अ0 आपके चचा के बेटे थे, कुर्आन शरीफ से मालूम होता है कि हज़रत लूत अ0 भी पैगम्बर थे, उन्होंने हज़रत इब्राहीम अ0 के पैगम्बर होने की तस्दीक (पुष्टि) की थी और आपके साथ थे, यह नहीं मालूम होता कि हज़रत लूत अ0 आग के वाक़िए (घटना) के वक्त मौजूद थे या बाद में पैदा हुए और इब्राहीम अ0 के पैगम्बर होने की तस्दीक की। जो भी हो, पवित्र कुर्आन कहता है "फ़आमनलहू लूत" इससे ऐसा मालूम होता है कि क़ौम ईमान नहीं लाई, यानी क़ौम ने इब्राहीम अ0 को पैगम्बर न माना तो लूत अ0 ने आपके पैगम्बर होने की तस्दीक़ की। आग के वाक़िए के बाद लम्बे ज़माने तक आप लोगों को अल्लाह पर ईमान लाने की दअ़वत देते रहे, मगर क़ौम ईमान न लाई। आप (हज़रत इब्राहीम अ0) की शादी चचा ज़ाद बहन सारा से हुई, पता नहीं चलता की यह शादी आग के वाक़िए से पहले हुई या बाद में। जब भी शादी हुई हो लेकिन वह भी हज़रत इब्राहीम अ0 पर ईमान लाईं। कहा जाता है कि नमरूद की बेटी भी आप पर ईमान ले आई थी, मगर औरत ज़ात होने के कारण अपने ईमान का एलान न कर सकी, और कहते हैं कि वह अपने बाला खाने पर से आग का वाक़िआ अफसोस के साथ देख रही थी। अल्लाह बेहतर जाने कि उसके ईमान की तस्दीक कहाँ से है। लेकिन उर्दू का मशहूर शेअ़र है "बे ख़तर कूद पड़ा, आतिशे नमरूद में इश्क, अक़्ल है महवे तमाशाए लबे बाम अभी" अर्थात अल्लाह का प्रेमी आदेश पाते ही किसी भय को ध्यान में न लाते हुए आग में कूद पड़ा, जब कि एक ऐसी

अल्लाह से प्रेम करने वाली बन्दी जिस का प्रेम अभी इश्क के स्तर तक न पहुँचा था, वह अपनी बुद्धि से विवश होकर अपने कोठे पर से आग का तमाशा देख रही थी।

बहरहाल आप (इब्राहीम अ0) लगभग साठ वर्षों तक लोगों को अल्लाह के दीन की तरफ बुलाते रहे, कौम ने आपके आग में जलने की घटना देखी, ज़ालिम नमरूद का मच्छर द्वारा मारा जाना देखा। इसी को किसी शाइर ने यूं कहा है, "पिश्शे ने मार डाला नमरूद सा सितमगर, हर लम्हा ख़ैर अपनी अल्लाह से तलब कर।

जब इब्राहीम अ0 ने देखा कि कौम ईमान नहीं ला रही है और उस की मुख़ालफत खत्म नहीं हो रही है तो आपने अल्लाह के हुक्म से अपनी जन्म भूमि बाबुल से शाम को हिज़रत की। साथ में हज़रत लूत और बीवी सारा भी थीं। सारा तो बहर हाल साथ थीं, लेकिन सही तौर से पता नहीं चलता कि हज़रत लूत अलै0 साथ थे कि नहीं। शाम का रास्ता मिस्र से होकर था, मिस्र का बादशाह बड़ा ज़ालिम और अय्याश था, मिस्र में सारा के साथ जो घटना मशहूर है वह अक्ल में नहीं आती, इसलिए कि रिवायात से पता चलता है कि उस वक्त हज़रत इब्राहीम अ0 की उम्र 75 वर्ष थी तो सारा की उम्र इसके क़रीब रही होगी। कहा जाता है कि उस बादशाह के मुल्क से जो खूबसूरत औरत गुज़रती वह उसे पकड़वा कर बुरा काम करता, उसके साथ अगर उसका शौहर होता तो उसे तक्लीफ पहुँचाता और अगर भाई होता तो छोड़ देता, जो भी हो, कहते हैं कि जब इब्राहीम अ0 से पूछा गया कि यह तुम्हारी कौन है। आपने जवाब दिया मेरी बहन है, बेशक वह आपकी दीनी बहन थीं, बादशाह ने सारा को पकड़वा भेजा, लेकिन जब सारा पर हाथ डालना चाहा तो वह अपाहिज़ हो गया, वह समझा कि यह कोई अल्लाह वाली है, कहने लगा दुआ कीजिए कि मैं ठीक हो जाऊँ और फिर आपको न छेड़ूंगा, हजरत सारा ने दुआ की। वह ठीक हो गया। मगर उसने फिर शरारत की और फिर मफलूज हुआ और हज़रत सारा की दुआ से ठीक हुआ, ऐसा तीन बार हुआ, आखिर कार बादशाह डर गया और अपनी शरारत से बाज आ गया। और उसने अपनी एक बांदी हाजिरा भेंट की, हज़रत सारा हजरत हाजरा के साथ हज़रत इब्राहीम अ0 के पास आईं। वह इबादत में मशगूल थे। इबादत के बाद हाल मालूम करके अल्लाह का शुक्र अदा किया, और शाम (सीरिया) की राह ली। हज़रत सारा बाँझ थीं, उनसे औलाद की उम्मीद न थी, हज़रत सारा ने अपनी बांदी हाजिरा, हज़रत इब्राहीम अ0 को पेश कर दी, आपने उनसे निकाह कर लिया और अल्लाह से औलाद की दुआ की। कुछ वर्षों पश्चात हज़रत हाजिरा से हज़रत इस्माईल अ0 पैदा हुए उस वक्त हजरत इब्राहीम 86 वर्ष के थे। अल्लाह तआला जब अपने खास बन्दों का खास तौर से वलियों और नबियों को आज़माता है तो इन कुदसी हज़रात (ईश भक्तों) को अपने अद्भुत परीक्षा (हैरत अंगेज़ इम्तिहान) में जो आनन्द मिलता है उसको किसी मिसाल से समझाया नहीं जा सकता।

बहरहाल 86 साल की उम्र में बच्चा मिलता है। साथ ही अल्लाह का यह आदेश मिलता है, ले जाओ इन माँ–बेटे को उस सूखी पहाड़ी के बीच छोड़ आओ। जहाँ न आदमी न आदमज़ाद, न पेड़ न पौधे, न कुआँ न तालाब। आप आज्ञा पालन करते हैं। माँ–बेटे को ले जाकर वहाँ छोड़ आते हैं। जहाँ आज मक्का आबाद है और जहाँ अल्लाह का घर काबा है, मगर उस वक्त वहां कुछ न था, बस हू का आलम था।

हज़रत हाजिरा को जब मालूम हुआ कि यह अल्लाह के हुक्म से है तो आप मुतमइन (सन्तुष्ट) हो गईं। अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम अ0 माँ–बेटे को छोड़ कर चले आये। हज़रत हाजिरा के पास शायद कुछ पानी था, जब वह खत्म हो गया और खुद और दूध पीता बच्चा प्यासा हुआ तो बच्चे को ज़मीन पर लिटा कर सफा व मरवा पहाड़ी की तरफ गईं, पानी तलाश रही थी, सफा व मरवा पहाड़ियों के बीच दौड़–दौड़ कर पहाड़ी पर चढ़तीं कि शायद कहीं कोई इन्सान दिख जाए, जिससे पानी तलब किया जाए, मगर कुछ न दिखा, बच्चे के पास वापस आईं। यहाँ अल्लाह तआला ने जिब्रील अ0 को भेज कर हज़रत इस्माईल अ0 की एडियों के पास पानी का चश्मा (स्रोत) जारी करवा दिया था, हज़रत हाजिरा खुश हुईं, पानी इस्तेमाल करने लगीं। इसी चश्में को आबे ज़मजम का कुआँ कहा जाता है और उसके पानी को ज़मजम कहते हैं, जिसे हाजी लोग पीते हैं। और इस बरकत वाले पानी को साथ लाकर लोगों को पिलाते हैं। हज़रत हाजिरा की सफा व मरवा के बीच की दौड़ अल्लाह के यहाँ ऐसी मकबूल हुई कि उसके बीच चलना हाजियों के लिए वाजिब किया गया।

उन माँ–बेटे के पानी पीने का मसअला तो इस तरह हल हुआ, मगर अल्लाह तआला ने उनके खाने का मसअला कैसे हल किया, रिवायत में इस का जिक्र नहीं मिलता, हाँ यह मिलता है कि कुछ ही रोज़ बाद वहाँ जरहम कबीले के लोग आए और हज़रत हाजिरा की इजाज़त से वहाँ बस गये, इस तरह हज़रत हाजिरा की तन्हाई दूर हुई।

रिवायत से पता चलता है कि इब्राहीम अ0 जब–तब अपने बीवी बच्चों को देखने आते थे। मगर यह कहीं नही मिलता कि इब्राहीम अ0 ने अपने बीवी बच्चों के खाने पीने का कोई इन्तिजाम किया हो। अल्लाह ही बेहतर जाने कि वह किस तरह और क्या खाते थे। जब हज़रत इस्माईल कुछ बड़े हुए और अपने वालिद के साथ दौड़ने–फिरने के लायक हो गये और बाप के अधिक प्रेम के पात्र बन गये तो फिर बड़ा इम्तिहान आया। हज़रत इब्राहीम अ0 ने स्वप्न देखा कि वह अपने बेटे को अल्लाह के लिए ज़ब्ह कर रहे हैं। पैग़म्बर का स्पप्न सत्य होता है। वह समझे कि मुझे स्वप्न में ईशादेश मिला है कि मैं अपने प्रिय इक्लौते बेटे को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ज़ब्ह कर दूँ। चुनांचि आप अपने लाड़ले बच्चे को लेकर ज़मज़म की जगह से दूर मिना ले गये। रास्ते में शैतान ने तीन बार बहकाने की कोशिश की मगर इब्राहीम अ0 ने उसे पत्थर मार कर भगा दिया। साथ में छुरी और रस्सी भी छुपा कर ले ली थी। मिना पहुँच कर बेटे से ख्वाब बताया, बेटा भी तो नबी होने वाला था, कहा अब्बा जान! आप को जो ईशादेश मिला है उसे कर गुजरिए, मुझे आप धैर्यवान पाएंगे। बाप ने अल्लाह की तौफीक से साहस पाकर प्रिय बेटे के हाथ पैर बाँध दिये, अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी और बेटे को लिटा कर छुरी चला दी, आवाज़ आई ऐ इब्राहीम! तुमने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया, लेकिन जब पट्टी खोली तो एक मेंढा ज़ब्ह हुआ पड़ा था, और हज़रत इस्माईल अलग खड़े थे। वास्तव में अल्लाह ने हज़रत जिब्रील को कहा कि इब्राहीम तो छुरी चलाने को तैयार हैं, बस छुरी चला देना ही चाहते हैं, तुम जन्नत से एक मेंढा ले जाकर इस्माईल से बदल दो, यह सब अल्लाह की कुदरत से आनन फानन में हुआ, हज़रत इब्राहीम को खबर भी न हुई, उन्होंने तो अपनी जानकारी में बेटे के गले पर छुरी चलाई, मगर अल्लाह की कुदरत से मेंढा ज़ब्ह हुआ। हज़रत इब्राहीम अ0 का यह अमल ऐसा मक़बूल

हुआ कि अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी सल्ल0 की उम्मत में कियामत तक के लिए जारी कर दिया और हज करने वालों पर उसी मिना में कुर्बानीं करने का आदेश दिया।

फ़िर अल्लाह तआला ने इब्राहीम अ0 को.वह जगह सुझाई जहाँ दादा आदम अ0 ने अल्लाह के हुक्म से काबा बनाया था और वह तूफाने नूह में खो गई थी, और आदेश दिया कि यहाँ अल्लाह का घर काबा बनाएं, चुनांचि हज़रत इब्राहीम अ0 ने बेटे इस्माईल अ0 से मदद लेते हुए काबे की तअमीर की, जब काबा तैयार हो गया तो अल्लाह ने इब्राहीम अ0 को आदेश दिया कि वह आवाज़ लगाएं कि लोग काबे का हज करने आएं, इब्राहीम अ0 ने आवाज़ लगाई और अल्लाह ने अपनी कुदरत से वह आवाज़ सारे संसार में पहुँचा दी और लोग हज करने आने लगे।

एक लम्बे काल के पश्चात शैतान ने लोगों को बहकाया और लोगों ने उस काबे में जिसे एक अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया था 360 बुत रख दिए।

हज़रत इब्राहीम अ0 की सन्तान में एक लम्बे समय के पश्चात अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को पैदा फरमाया, जब आप चालीस वर्ष के हुए तो आप को नुबूवत के कार्यों का आदेश दिया, आपने लोगों को एक अल्लाह की इबादत की दअवत दी, कुछ लोगों ने माना और बहुत से लोगों ने मुखालिफत की, यहाँ तक की आप सल्ल0 अल्लाह के हुक्म से मक्के से मदीने हिज़रत कर गये। इस्लाम फलता फूलता रहा, यहाँ तक की एक दिन मक्का फतह (विजयी) हुआ और फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने आखिर एक दिन काबे से बुतों को बाहर किया। आज इस्लाम सारे संसार में फैला हुआ है, यह अल्लाह की कुदरत है, हज़रत इस्माईल के ज़ब्ह न होने की मसलिहत (छुपी भलाई) वाजेह (स्पष्ट) है कि आप की सन्तान में अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को आना था।

हज़रत इब्राहीम अ0 के साथ हज़रत सारा, उनके बेटे हज़रत इस्हाक़ अ0 और हज़रत लूत अ0 के किस्से भी जुड़े हुए हैं, लेकिन यहाँ इतने ही पर बस किया जाता है। अल्लाह तआला हम सब को तमाम पैग़म्बरों पर ईमान रखने और उनसे अकीदत रखने, उनसे महब्बत करने और उन पर सलाम भेजने की तौफीक़ से नवाज़े। आमीन। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

नहीं। दाँत भी हर शख्स नहीं पहचानता, जानकार को देखना चाहिए।

प्रश्नः हाजी हवाई जहाज़ से उम्रा करने जा रहा था; उसने अपने एअरपोर्ट पर एहराम नहीं बाँधा, सोचा कि जहाज में मीकात से पहले बाँध लेगा, हवाई जहाज़ में उसे नींद आ गई और जद्दा पहुँच गया, उसने जद्दा में एहराम बाँध लिया यानी दो चादरें पहन कर उम्रे की नीयत की और तल्बिया कह लिया और मक्के में दम दे दिया उसका यह अमल दुरुस्त रहा या नहीं?

उत्तरः उसका यह अमल दुरुस्त रहा, हज के इरादे से जाए या उम्रे के इरादे से अगर गलती से एहराम के बिना मीकात पार कर जाए तो अगर मीकात पर लौटकर एहराम बाँधे तो उस पर कुछ नहीं, और अगर मीकात पर न आ सके तो जहाँ हो वहीं एहराम बाँध ले और दम देदे। एक कुर्बानी मक्के में करे। कुछ लोग इस गलती पर हिल में जाकर एहराम बाँधना जरूरी जानते हैं, इसकी ज़रूरत नहीं है, अगर हिले में जाकर एहराम बाँधा तब भी एहराम में आ गया, हरम में बाँधा तब भी सही है, मगर दम वाजिब होगा। ❑❑

दादी अम्माँ का बकरा

—इदारा

नकहत इस साल जामिअतुल मोमिनात से फारिग़ हो कर घर आई। रमज़ान में उसने अपनी दादी अम्माँ से मुतालबा किया कि वह अपने ज़ेवरात की ज़कात निकालें। दादी बोलीं, मेरे पास हैं ही क्या, झुम्कियाँ तेरी माँ को दे दी थी, चूड़ियाँ तेरी चाची को दे दी थी, अब सोने में बस मेरी नाक पर बुन्दा है, यह एक आने भर है, मैंने इसे 10 रूपये में खरीदा था। नकहत ने कहा दादी! चाँदी के ज़ेवरात तो हैं। बोलीं, मुझ बुढ़िया के पास क्या है? बस एक हबेल है जिसमें मलिका वाले 10 रूपये हैं, एक जोड़ा कड़ा है, एक जोड़ा छड़ा है।

दादी जितना है इस पर ज़कात है, अगर ज़कात नहीं दीजिएगा तो दोज़ख में डाल दी जाएंगी, अल्लाह की पनाह! दादी काँप गईं और फौरन बक्से में से तीनों जेवर बाहर लाईं और पोती के सामने डाल दिया और बोलीं, तेरे दादा मरहूम यह तीनों जेवर 100 रूपये में लाए थे।

नकहत ने पूछा 100 रूपये चाँदी के रहे होंगे, दादी बोली जब मैं ब्याह कर आई तो चाँदी ही के रूपये चलते थे। नकहत ने तीनो ज़ेवर तोले तो उनका वज़न पूरा एक किलो था। नकहत ने दादी को बताया इनकी कीमत आज कल के भाव से 54,000 रूपया हुई और इनकी ज़कात 1,350 रूपये हुई, बुन्दे की ज़कात अलग हुई, दादी बोलीं, मेरे पास 50 रूपये चाँदी के पड़े हैं उन्हीं से ज़कात निकाल दो, नकहत ने कहा उसमें से 4 रूपया निकाल दीजिए, नकहत ने 4 रूपये अपने वालिद को दिए कि इन को बेचकर दादी की जानिब से ज़कात अदा कर दें। ईद में फित्रा तो घर के गेहूँ से सब की तरफ से अदा किया गया। दादी कहने लगीं बेटी! इससे अच्छा तो यह है कि मैं यह चाँदी के गहने भी तुम दोनों बहनों को दे दूँ इसलिए कि मैं हर साल ज़कात कहां से अदा करूंगी, तेरे बाप को अदा करना पड़ेगा, न अदा हुई तो अल्लाह की पनाह! दोज़ख की आग, यह कह कर दादी रोने लगीं।

जीकअदा के महीने में नकहत ने कहा दादी! आप पर कुर्बानी भी है, या तो अब्बू से कहिए कि पडवे में एक हिस्सा आप का भी ले लें या फिर आप बकरा मंगवा लें। दादी कहने लगीं बेटी! मैंने कई साल हुए बकरे की कुर्बानी की थी, लोगों ने उस वक्त भी कहा था कि पड़वे में हिस्सा लेलें मगर मैंने कहा छः सवारों के साथ कैसे सवार हूंगी, मैं तो अपनी सवारी अलग से रखूंगी और बकरा ज़ब्ह किया था, बड़ा अच्छा बकरा था, वह बकरा मेरे लिए काफी है। अब दूसरा बकरा करूँगी तो दो बकरे पर एक साथ कैसे सवार हूंगी।

नकहत ज़ोर से हंसी, उसकी माँ और चाची भी आ गईं और दादी–पोती की बातचीत सुनने लगीं। नकहत ने कहा दादी! आपने तो सुना होगा कि कुर्बानी का जानवर पुल सिरात पार करने में मददगार होता है तो उसका यह मतलब नहीं कि कुर्बानी करने वाला अपने कुर्बानी के जानवर पर सवार होकर पुल सिरात पार करता है बल्कि उसका यह मतलब है कि कुर्बानी की बरकत से पुल सिरात पर तेजी से गुजर जाता है, वरना कुर्बानी तो माल वाले पर हर साल वाजिब है। माल वाला अपनी ज़िन्दगी में 40, 50 कुर्बानियाँ करता है। फिर वाकई आपके कौल के मुताबिक 40, 50 सावारियों पर कैसे सवार होगा।

दादी अम्मां ने कहा, अब मैं समझ गई, मैं बुढ़िया अब तक यही समझ रही थी, इसीलिए हर साल कुर्बानी नहीं करती थी। दादी अम्मां ने बाकी चाँदी के 46 रूपयों में से 10 रूपये बेटे को दिए कि वह एक अच्छा सा बकरा ला दे, 10 रूपये 5,400 रूपये के बिके जिनसे एक अच्छा और औसत दर्जे का बकरा पहली जिलहिज्जा को आ गया।

नकहत ने उसके गले में एक पट्टा डाल दिया और पुराने कपड़ों से उसका एक ओढ़ना बना कर उस पर डाल दिया।

दादी अम्मां ने कहा, मैं नाश्ते में दो चपातियाँ खाती हूँ, दोपहर में तीन और शाम में तीन, इन तीनों वक्तों में यह चपातियाँ डबल कर दी जाएं, मैं अपने बकरे को खिलाऊंगी, इस पर अमल शुरु हो गया और बकरा दादी अम्मां से ऐसा मानूस हुआ कि उनके पास एक खटोले पर बैठा रहता, नकहत के भाई उसे कभी बाहर ले जाकर घास चरा लाते और उसके लिए गूलर की पत्तियाँ मुहय्या करते।

बकरा भी अजीब था, जैसे पढ़ाया गया हो, जब पाखाना–पेशाब करना होता तो खटोले से हट कर घर के दूसरे जानिब पेशाब और पाखाना करने के बाद वापस आकर खटोले पर बैठ जाता, दादी अम्मां उस पर हाथ फेरतीं, सहलातीं जैसे किसी बच्चे को सहला रही हों।

दादी अम्मां की ही उम्र की उनकी एक पड़ोसन थीं, जिनसे दादी की बहुत बनती थी, वह आईं और बकरा देख कर बहुत खुश हुईं, मुबारक बाद दी, और बकरे को बाहर हकाते हुए कहा, कुर्बानी का बकरा है, जहाँ चाहे जाए, चरे। दादी अम्मां हंसने लगीं, पडोसन बैठ कर बातें करने लगीं, अभी थोड़ी ही देर गुज़रे थे कि मैकू रैदास लाठी से बकरे का हंकाते हुए चिल्लाता हुआ पहुँचा। बाँधों आपन बकड़ा, हमार सरसों चरत है, पड़ोसन बोल पड़ीं, अरे मैकू! यह कुर्बानी का बकरा है, आखिर तुम लोग भी तो मनुवा बकरा छोड़ते हो जो खेतों में चरता–फिरता है। मैकू बोला "हम सरसों न चरे देब, चाहे कुर्बानी कै बकड़ा हुए चाहे मनुवा बकरा"।

इतने में नकहत आ गई और बोली, जाओ मैकू भाई! बकरा अब तुम्हारे खेत में न जाएगा। फिर दादी और उसकी पड़ोसन को समझाया कि यह गलत है कि कुर्बानी के जानवर से दूसरों को नुक़सान पहुँचाया जाए, मैं तो कहती हूँ कि गूलर और पाकड़ की शाख भी दरख़्त के मालिक की इज़ाजत के बिना न तोड़ी जाए।

दस दिन की खिलाई से बकरा चिकना दिखने लगा, दस तारीख को जब नकहत के अब्बू बक़रईद की नमाज़ पढ कर आए तो कहा, मैं पड़वा ज़ब्ह करने बाद में जाऊँगा या कल ज़ब्ह करूँगा अम्मां का बकरा अभी ज़ब्ह होना है। दादी अम्मां ने कहा, बकरे को नहला तो लो, नकहत बोली नहलाने की कोई ज़रूरत नहीं, वह तो कुर्बानी के साथ दीन में नई बात हो जाएगी, जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने रोका है, कुर्बानी के बयान में कहीं नहीं मिलता कि कुर्बानी का जानवर कुर्बानी से पहले नहलाया जाए, दादी अम्मा तो पान न खाती थीं मगर कहीं से एक बीड़ा पान मंगवाया था, ताँबे के दो सिक्के भी मंगवा रखे थे, बोलीं, कुर्बानी से पहले बकरे के मुँह में यह पान और पैसा रख दिया जाए, नकहत बोली, दादी! यह सब आप को किसने बताया, यह भी एक बिदअत होगी और अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि हर बिदअत गुमराही है लिहाजा इससे बचना ज़रूरी है, और आप तो दोज़ख के जिक्र से कांपने लगती हैं, गुमराही की सज़ा दोज़ख है, दादी अम्मां ने पान का बीड़ा फेंक दिया।

नकहत ने कहा, दादी अम्मां! बकरा अब्बू ज़ब्ह करेंगे, अच्छा यह

शेष पृष्ठ .....26 पर

आदर्श शासक

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इस्लामी साम्राज्य के सम्राट से मिलने कुछ लोग मदीने से दमिश्क पहुँचे। भेंट हुई तो सम्राट हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह0 ने उनका हाल–चाल पूछने के बाद विशेष रूप से पूछा कि मदीने के अमुक स्थान पर कुछ फक़ीर बैठा करते थे, उनका क्या हाल है?

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़लीफा बनने से पूर्व मदीने के गवर्नर रह चुके थे। अपने गवर्नरी के दौर में उन्होंने अरब शासक वलीद बिन अब्दुल मलिक के निर्देश पर मस्जिदे नबवी को बहुत ही शानदार और खूबसूरत बनवाया था। ये वही वलीद बिन अब्दुल मलिक हैं जिनके शासन काल में मुसलमानों ने इस्लाम का विस्तार एक ओर स्पेन तो दूसरी ओर चीन तक तथा तीसरी तरफ सिन्ध तक किया।

ख़ैर! फक़ीरों की बात पूछने पर उन लोगों ने कहा अब वह फ़क़ीर उस स्थान पर नहीं बैठते, अल्लाह ने उनके हालात बदल दिये हैं।

याद रखने योग्य बात है कि अल्लाह बन्दों के ही द्वारा बन्दों के हालात बदलता है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह0 ने अपने शासन काल में आर्थिक पॉलिसी ऐसी बनाई थी कि इस्लामी साम्राज्य में आम आदमी की हालत सुधर जाए। ये जो आमतौर पर समझा जाता है कि रोटी, कपड़ा और मकान अथवा रोज़गार की समस्या का निदान कम्युनिस्ट क्रान्ति के पश्चात चीन अथवा रूस ने किया, गलत है, बल्कि वास्तविकता यही है कि लगभग सवा चौदह सौ वर्ष पूर्व इस्लाम ने ही उपरोक्त समस्याओं के निदान हेतु राह सुझाई। अब ये और बात है कि हम मुसलमान ही अपना इतिहास भुला बैठे हैं।

इस्लाम कहता है कि हुकूमत अल्लाह की अमानत है, चाहे दस आदमियों की हुकूमत हो चाहे दस करोड़ की। मुस्नद अहमद नामक ग्रन्थ में है कि हज़रत अबू उमामा रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का कथन है कि कोई व्यक्ति यदि दस आदमियों पर शासक नियुक्त हो तो क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने इस प्रकार आएगा कि उसका हाथ गर्दन से बंधा हुआ होगा, उसकी नेकियाँ या तो उसे छुटकारा दिला देंगी अथवा उसके पाप उसे हलाक कर देंगे।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज की पत्नी हज़रत फातिमा एक बार घर के काम–काज से छुट्टी पाकर आपकी सेवा में आईं तो देखा कि वह जानमाज़ पर बैठे हैं और आँखें आँसुओं से तर हैं, वह तुरन्त निकट गईं और पूछा, कोई विशेष बात? कहा, दरअस्ल मैंने मुसलमानों का शासक बनकर पूरे मुसलमानों की ज़िम्मेदारी अपने सर धर ली। देश में जितने भी छोटे–बड़े लोग हैं, सबकी देखभाल मेरा कर्तव्य है। मैं अल्लाह के सामने बैठा, निर्धनों, पीड़ितों, असहायों, बंधकों और यात्रियों के बारे में सोच रहा था, विभिन्न प्रदेशों में रहने वालों के बारे में चिन्तन–मनन कर रहा था, ऐसे लोगों के बारे में सोच रहा था जिनको अल्लाह ने पेट भर कर औलाद दी लेकिन उनकी आय बहुत कम है, गुज़र–बसर सम्भव नहीं। फातिमा! क़यामत में

शेष पृष्ठ .....29 पर

ज़िब्हे अज़ीम (महान बलिदान)

—ताजुद्दीन अशअर रामनगरी

बूढ़ा परदेसी पैग़म्बर रुख़ पे तक़द्दुस बिखरा बिखरा
ग़र्द आलूद परेशां चेहरा, फिर भी नूर से निखरा निखरा
शाम के देश से पैदल चलकर, आज हिजाज़ में आया है यह
हुक्मे खुदा को पूरा करने बन्दा बनकर आया है यह
हद्दे नज़र तक हू का आलम, गाँव न बस्ती, पेड़ न इन्सां
लंबा रस्ता, धूप की तेज़ी, रेत के जलते भुनते मैदां
एक खजूर की थैली और एक मशकीज़ा हाथ में है
बीवी, सब्र व शुक्र की मूरत पीछे पीछे साथ में है
जीवन साथी की गोदी में नन्हा सा इक बच्चा है
बच्चा है या नूर का पैकर, एक मअसूम फ़रिश्ता है
मुखड़े पर यूं खेल रहा है एक तबस्सुम हल्का हल्का
पिछले पहर चश्मे के अन्दर जैसे खिला हो फूल कंवल का
नन्हे मुन्ने से मुखड़े पर एक निराला भोला पन है
माँ की पुरशफ़क़्त गोदी में कितना खुश है कैसा मगन है
भोला भाला फूल सा बच्चा बाप के दिल का सहारा है
माँ उस पर वारी जाती है उसकी आँख का तारा है
जाने कितनी दुआओं ने रहमत का दर खड़काया है
माँ की सूनी गोद ने यह अनमोल रतन तब पाया है
दोनों अपने लाल की हर मासूम अदा पर मरते हैं
दोनों अपनी जान से बढ़ कर उससे मुहब्बत करते हैं
बूढ़ा परदेसी पैग़म्बर, क्या उसको पहचाना तुमने
कौन है, घर से क्यों निकला है? क्या कुछ यह भी जाना तुमने
इब्राहीम उसे कहते हैं और नगर में रहता था यह
बचपन ही से अच्छी बातें, सच्ची बातें कहता था यह
एक खुदा का सच्चा बन्दा, एक खुदा से डरने वाला
उसकी राह में जीने वाला, उसकी राह में मरने वाला
एक ही चिन्ता हर दम उसके मन को घेरे रहती है
एक लगन बस इसको निस दिन सांझ सवेरे रहती है
भूले भटके इन्सानों को कैसे राह पे लाऊँ मैं
एक ही रब के दर पर कैसे सबके शीश झुकाऊँ मैं
कुफ़्र व शिर्क मिटाने की दुनिया से क्या तदबीर करूँ मैं
इस दुनिया में कैसे एक नई दुनिया तआमीर करूँ मैं
प्रेम डगर में इस राही पर कैसे–कैसे संकट आये
लेकिन इक पल की ख़ातिर भी उसके पावों नहीं थर्राये
अपना सब कुछ मालिक की मरज़ी पर भेंट चढ़ाया उसने
आगे मौत खड़ी थी तब भी पीछे पग न हटाया उसने
उस पर जो भी बिपता बीती उसको हंस कर झेल गया यह
आग के शोलों के अन्दर भी जान की बाज़ी खेल गया यह
बाप ने अपने घर से निकाला क़ौम ने अत्याचार किया
राजा ने अग्नि में डाला जीना तक दुश्वार किया
मिस्र के रास्ते बाबुल से अब शाम को उसको जाना है
रब पे भरोसा करते हुए इस राह से उसको जाना है
राजा–प्रजा का रखवाला खुद ही वहां बटमार हुआ
परदेसी की लाज को लूटे इसके लिए तैयार हुआ
रब की मदद से मिस्र से होकर आखिर एक दिन शाम आया
लेकिन अब भी उस बन्दे को चैन न कुछ आराम आया
शाम के देश से पैदल चलकर आज हिजाज़ में आया है यह
हुक्म खुदा को पूरा करने बन्दा बनकर आया है यह

(इब्राहीम बीवी और बच्चे को वादिये ग़ैर ज़ीज़रअ मक्के में लाकर सरज़मीने हरम में छोड़ देते हैं ताकि वहाँ तौहीद व खुदा परस्ती का एक मरकज़ कायम करें और खुद वापस लौट जाते हैं कि मुल्क शाम वग़ैरह में तब्लीग़ व दअवत का

काम सर अनजाम दें, उम्मे इस्माईल अपने को तन्हा पा कर घबराती हैं और शौहर को पुकारती हैं जो कुछ दूर पहुँच कर पीछे मुड़ के बीवी और बच्चे को मुहब्बत भरी नज़रों से देखता जा रहा है)।

ऐ मेरे सरताज! किधर हमसे मुँह मोड़े जाते हो
इस जंगल में हम दोनों को किस पर छोड़े जाते हो
यह थोड़ा सा खाना पानी कब तक साथ निभायेगा
मेरी छाती सूख गई तो यह बच्चा मर जायेगा।
मैं बेचारी अबला नारी, आख़िर क्या कर सकती हूँ
इस मआसूम के जीवन की कैसे रक्षा कर सकती हूँ

(कई बरसों के बाद इब्राहीम अ0 मक्का वापस आये हैं, और अहलोअयाल के साथ रहने लगते हैं, एक रोज़ इस्माईल से मुख़ातिब होकर फ़रमाते हैं)

इस्माईल! ऐ लाडले बेटे! राहते मादर! जाने पिदर!
मेरे सोलह साल के गबरू! दिल के टुकड़े! लख़्ते जिगर!
तुझको कैसे बताऊँ मैं, तू मुझको कितना प्यारा है
ज्योति है मेरी आँखों की, बूढ़ी बाहों का सहारा है
मेरे लाल! इजाज़त दे तुझ को एक बात बताऊँ मैं
सपना जो मैंने देखा है पिछली रात बताऊँ मैं
देखा है कि पूरा मैं अल्लाह का फ़रमा करता हूँ
हुक्मे खुदा से राहे ख़ुदा में तुझ को कुर्बा करता हूँ
यह तो मेरा ख़्वाब हुआ, अब तू ये बता क्या कहता है
फ़र्ज़ को पूरा करता है या अक़्ल की रौ में बहता है

(इस्माईल साआदत मन्दाना लहजे में जवाब देते हैं)

अब्बा जान! ज़हे क़िस्मत जो आज यह साअ़त आई है
अपने ग़ुलाम पे आक़ा ने रहमत की नज़र फ़रमाई है
मालिक की मरज़ी के आगे जान की कुछ औक़ात नहीं
जिसने दी वह मांग रहा है कोई बड़ी यह बात नहीं
मेरा तन, मेरा जीवन, सब कुछ मालिक को अर्पण है
आप छुरी लें हाथों में, यह हाज़िर मेरी गरदन है

(बाप बेटे हुक्मे खुदावन्दी की तअ़मील के लिए, कमर बस्ता होकर सुनसान बियाबान में पहुँचते हैं, इस्माईल खुद ज़मीन पर लेट जाते हैं और इब्राहीम छुरी की तेज़ धार बेटे के नर्म व नाज़ुक गले पर रख देते हैं और तब)

फटने लगी कौनैन की छाती देख के ये दिल दोज़ नज़ारा
जंगल चुप–चुप, धरती गुमसुम अंबर का दिल पारा पारा
नब्ज़े दौरां साकित व सामित, वक़्त का धारा मद्धिम मद्धिम
चश्मे गेती गिरयाँ गिरयाँ, ज़ुल्फ़े हरती बरहम बरहम
जंगल के सब पंख पखेरू चीख़ रहे थे हांप रहे थे
गरदूँ पर अनगिनत फ़रिश्ते थर थर, थर थर काँप रहे थे
देशते नीली फ़ाम का राही चलते चलते ठहर गया था
फ़र्शे ज़मीं से अर्शे बरीं तक एक शोर फ़रयाद बपा था
ख़्वाब हक़ीकत के सांचे में सचमुच ढ़लने ही वाला था
बाप का ख़न्जर बेटे के हलक़ूम पे चलने ही वाला था
इतने में ये सौते ग़ैबी आई हरीमे कुद्स के दर से
मेरे ख़लील! उठाले जल्दी अपना ख़न्जर हलके पिसर से
हमको तेरे नूरे नज़र की कुर्बानी मतलूब नहीं है
जिससे तुझ को प्यार है क्या वह मेरा महबूब नहीं है?
जांच फ़क़त करनी थी हमको तेरे खुलूसे इश्क़ व वफ़ा की
तू इस जांच में पूरा उतरा, ख़्वाब को खुद तअबीर अता की
दुनिया की आइन्दा नस्लें ये कुर्बानी याद करेंगी
तसलीम व ईसार की ये बेमिस्ल कहानी याद करेंगी
फ़र्शे ज़मीं पर हर दौर में जब तक चरख़े नीली फ़ाम रहेगा
इन्सानों की इस दुनिया में ज़िन्दा तेरा नाम रहेगा
तुझको इमामत हासिल होगी, क़ौमों का सरदार बनेगा
तेरा उस्वा इस्लाम व ईमां का इक मेयार बनेगा

❖❖❖❖❖

इबादत नाम है रब की इताअत का

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

कितने अल्लाह के बन्दे ऐसे हैं जो अच्छे बुरे का ज्ञान लेकर बुरे कार्यों से बचते हैं तथा भले काम अपनाते हैं। अपनी बुद्धि से सोचते हैं कि यह पृथ्वी, यह आकाश, यह सूर्य, यह चन्द्रमा, आकाश गगन में यह छोटे बड़े असंख्य तारे स्वतः नहीं हैं इनका कोई बनाने वाला अवश्य है। यह सौर मण्डल की निर्धारित व्यवस्था जिस में कभी अंतर नहीं आता, अवश्य किसी बड़ी शक्ति द्वारा है। फिर इस धरती पर नाना प्रकार की छोटी बड़ी सृष्टि, उनमें सर्वश्रेष्ट मनुष्य इन सब को किसी विधाता ने रचा है। फिर वे अपनी बुद्धि के अनुसार उस शक्ति को अपने ध्यान में लाते हैं, घण्टों उसका मनन–चिन्तन करते हैं, उसको अपने ध्यान में लाकर नत मस्तक हो जाते हैं, अपनी बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा करते हैं, धन्य हैं ऐसे लोग। निः सन्देह उनको महापुरुष कहा जा सकता है। उनको बुद्धिजीवी कहा जा सकता है, परन्तु इस्लाम इससे अलग बात कहता है। इस्लाम बताता है कि अल्लाह (विधाता) ने हर काल में अपने बन्दों के पथ प्रदर्शन के लिए पैगम्बर भेजे तथा अपने सभी बन्दों के लिए यह अनिवार्य किया कि वह अपने काल के पैगम्बर (सन्देष्टा) को मानें और उनसे पथ प्रदर्शन लें; अतः बुद्धिजीवियों ने अपने काल के पैगम्बर को स्वीकार करके उनका अनुकरण किया है। अलबत्ता जिस बुद्धिजीवी की किसी पैगम्बर से भेंट न हुई या उस तक पैगम्बर का सन्देश न पहुँच सका उसको अल्लाह क्षमा कर देगा परन्तु जिसने अपने काल के पैगम्बर को नकार दिया तो वह चाहे जितना बड़ा बुद्धिजीवी अथवा महापुरुष हो अल्लाह उससे राजी और प्रसन्न नहीं हो सकता अपितु वह ईश प्रकोप (खुदाई अज़ाब) का भागी होगा।

इस्लाम यह भी बताता है कि यह पैगम्बर का सिलसिला आख़िरी रसूल (अन्तिम सन्देष्टा) हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर समाप्त हो चुका, अब कोई कितना ही बुद्धिजीवी हो, महापुरुष हो, हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को आख़िरी रसूल माने बिना तथा आपसे पथ प्रदर्शन लिए बिना तथा आपके अनुकरण बिना अल्लाह को राजी नहीं कर सकता अपितु उसके प्रकोप का भागी होगा।

हमारे बहुत से भाई हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को आखिरी रसूल तो मानते हैं, आपसे रहनुमाई (पथ प्रदर्शन) लेकर नमाज़–रोज़ा भी करते हैं, परन्तु बहुत सी बातों में अपनी बुद्धि के अनुसार ऐसा काम अपनाते हैं जिसकी शिक्षा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने नहीं दी, और वह धोखे में हैं कि अल्लाह और उसके रसूल उनके उन कामों से प्रसन्न होंगे, अल्लाह उनको समझ दे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने स्पष्ट बता दिया कि जिस की शिक्षा मैंने नहीं दी परन्तु किसी ने अपनी बुद्धि से उसे दीन में मिला लिया वह पथ भ्रष्ट है (यह एक हदीस का सार है) फिर हमारे भाई सोचें और डरें कि वह अपनी बुद्धि से जो बहुत सी बातें दीन (धर्म) में मिला रहे हैं उनका परिणाम क्या होगा?

आज कल हज का मौसम है, लोग हज को जा रहे हैं, हज जीवन में एक बार फर्ज है, वह भी माल वालों पर, लोग हज को जाते हैं, वहाँ तवाफ करते हैं, काबे के गिर्द सात चक्कर लगाने से एक तवाफ होता है, कोई अपनी अक़्ल से आठ चक्कर नहीं लगाता,

सफा–मरवा के बीच सात बार चलने से सई पूरी होती है, कोई नहीं सोचता कि ज़िन्दगी में एक बार अवसर मिला है क्यों सात बार ही चलें ज़्यादा क्यों न चल लें। अरफात में नुम्रा मस्जिद में जुहर के साथ अस्र की नमाज़ भी पढ़ी जाती है, कोई नहीं सोचता कि यह दो समय की नमाज़ एक साथ क्यों पढ़ें, सब खुशी से दोनों नमाज़े एक साथ पढ़ते हैं, फिर सूरज डूब चुका है, मग़रिब का वक्त आ चुका है, कोई कठिनाई या रुकावट भी नहीं है, फिर भी अरफात में मग़रिब की नमाज़ कोई नहीं पढ़ता, बल्कि मुज़दल्फा पहुँच कर मग़रिब व इशा एक साथ पढ़ते हैं। इन सब बातों से यह ज्ञात हुआ कि इबादत नाम है रब की इताअ़त का (उपासना नाम है ईश–आज्ञा पालन का)।

अल्लाह ने अपने अन्तिम तथा प्रिय रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 द्वारा शिक्षा दी कि तीन खम्भों (आज कल दीवारों) को सात कंकरी मारो, बस कुछ नहीं सोचना है न आठ कंकरी मारना है न छः। सात कंकरीयाँ अलग–अलग मारना ही इबादत है, जूते, चप्पल लाठी–डण्डा मारना हरगिज़ इबादत नहीं। अतः मेरे भाइयो! पाँच वक्त की फर्ज नमाज़ें सुन्नतों के साथ पढ़ो, अल्लाह तौफीक़ दे कि तहज्जुद, इशराक़, अव्वाबीन पढ़ो और जितनी चाहो नफ्लें पढ़ो। रमज़ान के फर्ज रोज़े रखो और अल्लाह तौफीक़ दे कि मसनून और नफ्ल रोज़े रखो, जक़ात अदा करने के बाद अल्लाह तौफीक़ दे कि गरीबों की मदद करके दीन वाले तलबा की मदद करके और दूसरे अच्छे कामों में पैसा लगा कर सवाब कमाओ। लेकिन ऐसे कामों से दूर रहो जिनकी शिक्षा अल्लाह के नबी सल्ल0 ने नहीं दी, अपितु उनको पथभ्रष्टा (गुमराही) ठहराया। हम अपने लिए और अपने सभी भाइयों के लिए अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हम सब को अपने पसन्दीदा रास्ते पर चलाए।

❑❑

दादी अम्माँ का बकरा.....

नकहत बोली ना दादी! पहली वाली गलती अब न दुहराई जाएगी, गोश्त घर के लड़के तक्सीम कर लेंगे, नाई से न तक्सीम करवाया जाएगा, और अगर नाई या नावन तक्सीम करते हैं तो उनको घर से उज़रत दी जाएगी, उजरत में कल्ला हरगिज़ न दिया जाएगा न नाई नावन को इसकी इजाजत होगी कि वह जहाँ गोश्त पहुंचाए वहाँ से कुछ लें, इसी तरह चिकवे या कस्साब को गोश्त बनाने के बदले में खाल या गोश्त देना नाजाइज़ है। बेहतर यह है कि चिकवा हो या नाई पहले से उजरत बता दें या तय कर लें और उसे अदा करें। इसी पर अमल हुआ।

बकरईद के दो दिन बाद दादी अम्मां ने अपनी दोनों पोतियों नकहत और फरहत को बुला कर चाँदी के तीनों जेवरात उनके हवाले करते हुए कहा, जेवर रखने में बड़े झगड़े हैं, मैं नही रखना चाहती, अब मेरे पास एक बुन्दा है और 36 रूपये, यह रूपये भी मैं दे डालूँगी मुझे इनकी कोई ज़रूरत नहीं। मरुँगी तो कफन तेरा बाप देगा ही कि मैंने उसको जना है। अल्लाह हम सब की मदद करे।

❑❑

है कि आप ज़ब्ह के वक्त उस जगह खड़ी हो जाएं और ज़ब्ह करते हुए देखें कि इसमें सवाब है, दादी अम्मां ज़ब्ह के वक्त खड़ी हुईं, बकरा लिटाया गया तो उनके चेहरे का रंग बदल गया और छुरी चली, खून बहा तो दादी अम्मां के भी मोटे–मोटे आँसू गिर पड़े, दादी अम्मा आकर अपने पलंग पर लेट गईं।

थोड़ी देर बाद पोती को बुलाया और कहा कि कल्ला तो नाई का हक़ है, और खाल तो चिकवा गोश्त बनाने के बदले ले जाएगा।

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों के लिखने में कठिनाइयाँ

—इदारा

अरबी के बहुत से अक्षर हिन्दी लिपि में नहीं हैं, अतः हिन्दी भाषियों के लिए उनके उच्चारण में भी कठिनाई है तथा उनके लिखने में भी, हम इस लेख में उनके उदाहरण और उनके समाधान प्रस्तुत करेंगे।

स्पष्ट रहे कि इससे हमारा यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि अरबी, फारसी, उर्दू लिपि की अनदेखी करके इन भाषाओं को हिन्दी लिपि में लिखा जाए, मैं इसका घोर विरोधी हूँ जो भी ऐसा चाहेगा वह उन भाषाओं को वध करने का प्रयास करेगा। परन्तु विद्यमान परिस्थिति में इस हिन्दी लेखों में विशेष कर धार्मिक लेखों में अरबी, फारसी और उर्दू के शब्दों के प्रयोग पर विवश हैं, कारण यह है कि आज हमारा पढ़ा–लिखा मुस्लिम नवयुवक उर्दू, अरबी, फारसी भाषा से दूर जा पड़ा है, उसको इस्लाम धर्म तथा इस्लामी अख़्लाक़ सिखाने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाना पड़ रहा है और इस्लाम धर्म तथा इस्लामी अख़्लाक़ सिखाने के लिए बहुत से अरबी, फारसी और उर्दू के शब्द हिन्दी लिपि में लिखने पड़ते हैं, अतः अरबी, फारसी और उर्दू के विशेष अक्षरों वाले शब्दों को लिखने की समस्या का समाधान आवश्यक है।

साबित (सिद्ध), सालिम (पूर्ण अथवा सुरक्षित), साबिर (धैर्यवान), इन तीनों शब्दों में पहला अक्षर "स" का स्वर देता है परन्तु उर्दू में यह तीनों अक्षर विभिन्न हैं। यह तीनों शब्द एक ही प्रकार के "स" से लिखे जाएं तो यह अस्वीकार होंगे तथा त्रुटि समझे जाएंगे। लेकिन बोली में तीनों की ध्वनि एक ही प्रकार की हैं, अतः इस प्रकार के विभिन्न "स" हिन्दी में एक ही "स" से लिखे जाते हैं। मगर कुर्आन की आयत लिखने में इनमें विभिन्नता लाना आवश्यक हैं कि पवित्र कुर्आन में इस विभिन्न प्रकार के "स" के अलावा अलग–अलग उच्चारण हैं।

पवित्र कुर्आन की आयात को अरबी भाषा के अतिरिक्त किसी भाषा में लिखना ठीक नहीं है। अरबी भाषा में भी ख़त्ते उस्मानी (उस्मानी निर्धारित लिखावट) में लिखना आवश्यक है, परन्तु जिस प्रकार कुर्आन टेप रिकार्डर में भरा जा सकता है उसी प्रकार किसी भाषा में उसके स्वरों को सुरक्षित किया जा सकता है, उसको कुर्आन का दर्जा तो न प्राप्त होगा, परन्तु जिस भाषा में उसे सुरक्षित करें उसमें अरबी के हर अक्षर के स्थान पर कोई अक्षर अथवा चिन्ह हो। कुछ विद्वानों ने बिन्दियों से अन्तर करके अरबी के सारे अक्षर हिन्दी में नियुक्त किये हैं, इस विषय पर हम लेख के अंत में बात करेंगे, अभी तो हम उर्दू में लिखे और बोले जाने वाले अरबी, फारसी शब्दों को हिन्दी लिपि में लिखने की बात कर रहे हैं।

ख़रबूजा तथा ख़रगोश का "ख" खाड़ी के "ख़" से विभिन्न है, इसे तो "ख" के नीचे बिन्दी डाल कर "ख" बना लिया गया है, ज़र्रा (कण) ज़र (सोना) ज़र्ब (चोट अथवा गुणा) ज़र्फ (बरतन) इन चारों शब्दों के "ज" जन के "ज" से विभिन्न हैं, तथा उर्दू में सब की अलग अलग लिखावटें हैं, उसी स्वर के दूसरे अक्षर से कई शब्द के अर्थ ही बदल जाते हैं। परन्तु इन सब की आवाज़ें बोलने में एक हैं इसलिए "ज" के नीचे बिन्दी रख कर लिखा जाता है। तलवार और ताकत का "त" उर्दू में विभिन्न है, परन्तु बोली में सह स्वर होने के कारण हिन्दी में दोनों "त" से लिख दिये जाते हैं, इस अंतर को उर्दू का ज्ञान रखने

वाला ही समझ सकता है।

अलम (पीड़ा) अ़लम (झण्डा) इल्म (विद्या) ईद (प्रसन्नता अथवा प्रसिद्ध त्योहार) उ़म्र (आयु) ऊ़द (एक सुगन्धित लकड़ी अथवा लकड़ी) ऐ़ब (विकार) औ़न (सहायता) इन सभी शब्दों के पहले अक्षर पर ध्यान दें यह अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, और से विभिन्न उच्चारण रखते हैं, जिनको जानकार से सीखे बिना बोला नहीं जा सकता है, कुछ लोगों ने इन सबके नीचे बिन्दी रख कर इनको शुद्ध लिखने की चेष्टा की है। कुछ विद्वानों ने "अ" के नीचे बिन्दी रख कर अ़, आ़, अ़ि, ओ़, अ़ु, अ़ू, अ़े, अ़ै, ओ़, औ़, लिखा है परन्तु अधिक लोगों ने इसकी अनदेखी की है तथा अ़लम अथवा अलम के लिखने में कोई अंतर नहीं किया है। ग़म (दुख) का "ग" गाय के "ग" से विभिन्न है, अतः ग़म के "ग" के नीचे बिन्दी लगाई गई है। इसी प्रकार फ़कीर का "फ" फल के "फ" से विभिन्न है अतः फ़कीर में "फ" के नीचे बिन्दी लगाई गई, ऐसे ही क़लम का "क" काग़ज़ के "क" से विभिन्न है अतः क़लम के "क" के नीचे बिन्दी रखी गई।

जो लोग केवल हिन्दी भाषा से अवगत हैं, उनसे हमारी कोई मांग नहीं, परन्तु जो लोग उर्दू, हिन्दी दोनों भाषाओं के ज्ञाता हैं उनके लिये किसी प्रकार यह उचित नहीं कि वह बिन्दी वाले अक्षरों को नज़र अन्दाज़ कर दें, विशेष कर दीनी लेखों में इन बिन्दी वाले अक्षरों के नीचे बिन्दी लगाना अति आवश्यक है। उर्दू के जिन शब्दों के अन्त में हा ए मुख्तफी (अनोच्चारित 'ह') होता है जैसे कलिमः, रफ्तः, मक्कः, मदीनः आदि इनको विसर्ग से भी लिखा जा सकता है और "आ" की मात्र से भी लिखा जा सकता है जैसे मक्का, मदीना आदि।

बड़ी कठिनाई होती है फारसी की मजहूल ज़ेर में, मजहूल ज़ेर का मतलब है "ए" की मात्रा को आधा खींच कर उच्चारण करना। यह फारसी तरकीबों में आती है। जैसे दीवाने ग़ालिब, राहे खुदा आदि। इन शब्दों में दीवाने की ने को पूरा खींचा गया, या राहे खुदा में राहे की हे को पूरा खींचना अशुद्ध है, परन्तु इसको कैसे लिखें कि "ए" की मात्रा की आवाज़ आधी निकले, पंडित नन्द कुमार अवस्थी ने "ए" की मात्रा को टेढ़ी करके दीवाने ग़ालिब लिखा है, लेकिन इसकी कम्पोजिंग में कठिनाई है, अतः बहुत से लोगों ने ए की मात्रा ही से लिखा है। कुछ लोगों ने ए की मात्रा के स्थान पर दो डेशों के बीच –ए– लिखा है जैसे दीवान–ए–ग़ालिब लिखा, परन्तु मेरे निकट यह अशुद्ध है। **पहली बात,** तो ए की टेढ़ी मात्रा की भांति समझाये बिना इसे कोई पढ़ नहीं सकता, दूसरी बात यह है कि फारसी की दूसरी तरकीबें जिनके अन्त में "ह" होता है और उनको ज़ेर देना हो तो कैसे लिखेंगे, जैसे ख़ान–ए–खुदा, सज्द–ए–शुक्र आदि। अतः –ए– से ज़ेरे मजहूल लिखना अशुद्ध है। कुछ लोगों ने इसे ज़ेरे मारुफ से लिखा है जैसे दीवाने ग़ालिब, राहे खुदा आदि। मैं समझता हूँ यदि कम्प्यूटर में "ए" की टेढ़ी मात्रा न आ सके तो ज़ेर लिखना अधिक शुद्ध है। या "ए" की मात्र ही से लिखें परन्तु –ए– से ज़ेरे मजहूल न लिखें।

अरबी के शब्द या वाक्य हिन्दी लिपि में लिखते समय शब्द के अन्त में अक्षर पर जब ज़बर होता है, ज़बर कहते हैं उसको जो "आ" की मात्रा की आधी आवाज़ है, जैसे "लाइलाह इल्ला अन्त" इस वाक्य में इलाह के "ह" तथा अन्त के "त" पर ज़बर है इसको "हा", "ता" लिखना ग़लत है। संस्कृत में तो बिन हलन्त वाला अक्षर उर्दू के ज़बर ही की भांति पढ़ा जाता है, परन्तु हिन्दी में हर शब्द का अन्तिम अक्षर साकिन (हलन्ती) पढ़ा जाता है। अतः अरबी वाक्य

हिन्दी में लिखने से पहले यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि जिस अक्षर के नीचे हलन्त न हो उसे हलन्ती न पढ़ कर "क","ख" आदि की भांति उच्चारित करें।

रही बात कुर्आन शरीफ की आवाज़ में हिन्दी लिपि में लिखने और सुरक्षित करने की तो इस विषय में श्री नन्द कुमार अवस्थी ने अरबी के सभी अक्षरों को बिन्दियों द्वारा बना कर कुर्आन मजीद का मतन लिख दिया है। परन्तु उनकी बिन्दियाँ तथा मद्द आदि कम्प्यूटर से कम्पोज़ नहीं हो सकतीं, इसकी दो ही शक्लें हैं या तो साफ्टवेयर वाले इन विशेष अक्षरों को बढ़ायें और हिन्दी प्रोग्राम में सम्मलित करें और यह पाँच अक्षरों से अधिक नहीं हैं या फिर वह उलमा जो हिन्दी का भी ज्ञान रखते हैं मिल बैठकर एवं इन अक्षरों के लिए ऐसे चिन्ह नियुक्त करें जिनसे ज़रूरत पर कुर्आन मजीद की आयतों की आवाज़ कम्प्यूटर से कम्पोज़ की जा सकें।

मेरे मस्तिष्क में इस का प्रारूप है परन्तु यह एक मीटिंग में तय करके समाचार पत्रों के द्वारा इसका एलान होना चाहिए। कुर्आन मजीद लिखने के लिए जो हिन्दी अपनाई जाए उसमें समानता हो। ❑❑

आदर्श शासक .....

अल्लाह मुझसे उनके बारे में पूछेगा और जानती हो अल्लाह के दरबार में उन पीड़ितों की ओर से वकील कौन होगा?

वकील होंगे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम! उस अवसर पर मेरा हाल क्या होगा? बस यही सोच कर रो रहा हूँ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज रह0 को इसकी बड़ी चिन्ता रहती थी कि जनता निर्धनता और भुखमरी से छुटकारा पाये। इसी लिए वह मदीने से आने वालों से उन फक़ीरों के बारे में पूछा था।

इतिहासकारों ने लिखा है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के शासन काल में व्यवस्था–प्रबन्ध चौकस रहने से आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी हो गई कि लोग ज़कात (धर्मादाय) की रक़म पात्रों को देने के लिए निकलते मगर ज़कात का कोई पात्र न मिलता। ये इस्लामी शासन व्यवस्था की बेहतरीन मिसाल है। ❑❑

इम्तिहान

हज़रत ख़लीलुल्लाह ने ख़्वाब जब देखा अजीब
कर रहा हूँ ज़ब्ह़ बेटा दिल से बोले या मुजीब
है इशारा साफ इसमें ज़ब्ह़ बेटा मैं करूँ
चूँ चरा मैं न करूँ और बस तुझे राज़ी करूँ
बाप ने रखी छुरी जब बेटे के ह़लकूम पर
देख कर मन्ज़र अ़जब लरज़ा पड़ा मख़्लूक़ पर
हुक्म बदला फिर अचानक एक मेंढ़ा भेज कर
हुक्मे रब है ज़ब्ह़ कर मेंढ़ा तू यह जाए पिसर
ज़िन्दा रहना था अभी हज़रत ज़बीहुल्लाह को
था निकलना सुल्ब से उनकी रसूलुल्लाह को
यह फक़त था इम्तिहां जिसमें हुए वह कामयाब
रहमतें सब अम्बिया पर हैं वह सब इ़ज़्ज़त मआब

ज्ञान यदि धन के अधीन है तो अज्ञानता है

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी अनु0—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

आदरणीय उपस्थित जनों और सम्मानित श्रोतागण! हम और आप यहाँ एक शैक्षिक संस्था की आध ारशिला रखने हेतु उपस्थित हुए हैं और इस अज्ञानता काल में ज्ञान की आधारशिला रखने हेतु इकट्ठा होना एक सद्कर्म है और सद्शगुन भी। इस दुष्टिकोण से हम एक दूसरे को बधाई देने के अधिकारी हैं कि कम से कम हम को इस दौर में इस बात का विचार आया। अकबर इलाहाबादी मरहूम जो शेरो शायरी में अपना एक अलग ही अन्दाज़ रखते हैं, कहते हैं:

"रक़ीबों ने रपट लिखवाई है
जा जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है
खुदा का इस ज़माने में।"

तो इस अज्ञानता काल में ज्ञान का नाम लेना विचित्र सी बात है न! आप लोग भी आश्चर्य में पड़ गये होंगे कि मौलवी साहब को क्या हो गया है कि दौरे इल्म को दौरे जिहालत कह रहे हैं, चहुँओर तो ज्ञान की चर्चा है, फिर भी ऐसी बात! भाई! ये दौर चर्चे का है, पर्चे का है, और शहर में चले जाइये तो कोई न कोई पर्चा भी दिखाई देगा। मगर मेरा जैसा कहने वाला कह रहा है कि ये अज्ञानता काल है तो बात अजीब है, और आप भी उसको अजीब समझ रहे होंगे, लेकिन आपके अजीब में और हमारे अजीब में तनिक अन्तर है, प्रायः ये समझा जाता है कि युनिवर्सिटियाँ, कॉलेजेस और शिक्षा की वर्तमान गर्मबाज़ारी का नाम ज्ञान है, हाँ है, और मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो उसको ज्ञान नहीं कहते। इसमें भी दो दृष्टिकोण हैं। कुछ लोग तो उसे ज्ञान कहने को तैयार नहीं, लेकिन हम उन लोगों में से हैं जो उसको ज्ञान कहते हैं और उसे सीखने पर उभारते भी हैं और उसके लिए जो साधन—संसाधन हैं उसे अपनाने का प्रचार भी करते हैं। मानो उसका पर्चा हम भी छापते हैं कि पढ़ो उसको, लेकिन उसमें और इसमें तनिक अन्तर है। हज़रत अली रज़ि0 का एक शेर है जिसका तात्पर्य ये है कि "अल्लाह ने जो हमारी क़िस्मत बनाई है और जो हमारे भाग्य में रखा है हम प्रसन्न हैं और क्यों नहीं प्रसन्न हों कि हमको मिला ज्ञान और अज्ञानियों को मिला धन, क्योंकि धन शीघ्र ही समाप्त हो जाता है किन्तु ज्ञान शेष रहेगा, उसका पतन नहीं है।

बस यहीं से दोनों के बारे में निर्णय हो गया। ज्ञान यदि धन के अधीन हो तो अज्ञानता है और धन यदि ज्ञान के अधीन हो तो वह ज्ञान है। बस अब अन्तर आपको समझ में आ गया होगा। इसलिए कुर्आन और हदीस का जो ज्ञान है वह धन के अधीन हो ही नहीं सकता और ये जो ज्ञान है कभी अधीन होता है कभी नहीं होता है। तो अब इसमें भी दो समस्याएं हैं, कुछ हम जैसे नाकारा लोगों ने धार्मिक ज्ञान (इल्मे दीन) को भी धन के अधीन बन दिया अथवा बनाने की चेष्टा की तो इस इल्म की जो बरकतें और इस ज्ञान का जो चित्रण था वह आँखों से ओझल हो गया।

इसी प्रकार शेष समस्त जगत ने उस ज्ञान को धन के अधीन बना दिया तो वह ज्ञान *वबाल* बन गया, समस्त मानवता के लिए कलंक का टीका हो गया, इसी कारण आज जो लोग ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं वह ज्ञान लाभ देने के बजाये हानि पहुँचा रहा है।

इसीलिए कुछ लोग डॉक्टर तो बन जाते हैं मगर बहुत से डॉक्टर डाकू बन जाते हैं। उनके पास ज्ञान तो होता है लेकिन गुर्दा निकाल कर बेचने का ज्ञान है। ज्ञान है मगर रॉकेट बना कर इन्सानों को हलाक करने का ज्ञान है। ज्ञान है लेकिन ज़हरीली गैस बनाकर छोड़ने और इन्सानों को तबाह करने का ज्ञान है। वास्तविकता यही है कि वह ज्ञान नहीं बल्कि अज्ञानता है। और इस ज्ञान के बड़े–बड़े ठेकेदार मौजूद हैं, लेकिन वह दुनिया के इतने बड़े जाहिल हैं कि शायद समस्त मानव इतिहास में इतने बड़े जाहिल कभी पैदा न हुए। क्योंकि उनका ज्ञान धन के अधीन है। आपने सुना होगा कि अभी कुछ स्टूडेण्ट्स का इन्टरव्यू हुआ, उसमें हमारे कुछ जानने वाले भी थे। हमारे नवजवान कुछ पैकेज पर उठा लिये जाते हैं। सत्तर लाख का पैकेज, डेढ़ करोड़ का पैकेज़, आपने देखा होगा? अभी भी चल रहा है कि पढ़ाई के ज़माने में ही उनको उठा लेते हैं, उचक लेते हैं, उचक क्यों लेते हैं? इसलिए कि ये ज्ञान ही धन के अधीन हो गया है, सम्पत्ति का दास बन गया है। यदि धन के अधीन ये ज्ञान न होता ता उचक न पाते। ज्ञान बना ही इसलिए है कि मानव को लाभ पहुँचाए। उदाहरणतः इंजीनियर क्यों इंजीनियर बनता है ताकि आपके पास मकान के लिए थोड़ी सी जगह है तो उस थोड़ी सी जगह में मानव कैसे लाभ प्राप्त करे इंजीनियर उसको बताता है। अब यदि इंजीनियर उससे केवल पैसा कमाना और हथियाना सीख ले तो अब यही वबाल हो गया उसके लिए। पैसा ज़रूरत के लिए होता है और इन्सान का मूल उद्देश्य लाभ पहुँचाना है। तो असल मामला ये है कि ज्ञान सबसे ऊपर होना चाहिए, फिर उसके नीचे धन होना चाहिए।

धन एक आवश्यक वस्तु है। शैक्षिक क्षेत्रों में ये बात मशहूर है कि जो चीज़ ज़रूरत की होती है उसको आवश्यकतानुसार ही लेना चाहिए और जो चीज़ ज़रूरत की है और आवश्यकता से अधिक आ जाए तो क्या होगा। उदाहरणतः खाने–पीने और पहनने की चीज़ें ये सब ज़रूरत की चीज़ें हैं, ऐसी ही जितनी भी ज़रूरत की चीज़े हैं यदि उन चीज़ों में संतुलन न बनाया जाए तो वह चीज़ें वबाले जान बन जाएंगी। तो धन भी आवश्यकतानुसार होना चाहिए, जितनी ज़रूरत पड़ती जाए, माल आपको मिलता जाए। हमारे बुजुर्गों ने धन को सदैव अपने अधीन रखा, जितनी आवश्यकता होती ले लेते थे और शेष छोड़ देते थे, दूसरों के लिए। यहाँ तक कि ऐसी घटनाएं भी उस काल में घटती थीं कि दो दुकानदार हैं, एक की बिक्री अधिक हो गई जिससे उसकी ज़रूरत आसानी से पूरी हो सकती थी, तो उसने नये ग्राहकों से कहा कि हमारे यहाँ बिक्री अधिक हो गई है तुम वहाँ जाकर ख़रीद लो। क्योंकि वह माल को ज़रूरत की चीज़ समझते थे। लेकिन आज मामला उल्टा है, सोचते हैं कि उसका एक भी न बिके, हमारा सब बिक जाए। तो उसके परिणाम में हर काम वबाल बन रहा है। बल्कि इस समय की सोच ये हो गई है कि सामने वाले का एक–एक क़तरा निचोड़ लें। एक उदाहरण और देता हूँ कि मोबाईल है, मोबाईल ब्याज के रूप में है। ब्याज क्या होता है? आदमी कर्ज़ लेता है और फिर कर्ज़ देने के लिए थोड़ा उसमें शामिल करना पड़ता है, उससे वह खून पीते हैं इन्सानियत का। ऐसे ही मोबाईल कम्पनियाँ समस्त मानव का खून पीती हैं। ये जो पैसा है वह बहुत अच्छा हलाल का नहीं है, मेरे निकट तो उसमें कराहत है। मोबाईल वाले बेफायदा बातें करते हैं, पैसे ख़र्च करते हैं, बेफायदा ख़र्च इस्लाम में जायज़ नहीं। ❑❑

ज़ब्ह का बयान

—इदारा

अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए जिन जानवरों का गोश्त हलाल किया है, उनका ज़ब्ह किया जाना ज़रूरी है। ज़ब्ह किये बगैर उनका खाना हराम है। ग़ैर मुस्लिम भाइयों के यहाँ ज़ब्ह नहीं है, वह जिस जानवर का गोश्त खाना चाहते हैं उसकी गरदन किसी धार वाले औज़ार से अलग कर देते हैं या उस की गरदन मरोड़ देते हैं, ऐसा जानवर मुर्दार है और नजिस भी है, उसका खाना मुसलमानों के लिए हराम है। कुछ गैर मुस्लिम होटलों में ऐसा ही गोश्त होता है, किसी मुसलमान के लिए ऐसे होटलों में खाना खाना दुरुस्त नहीं। कुछ लोग समझते हैं कि उनके यहाँ सब्जी गिज़ाएं (शाकाहार) खाई जा सकती हैं, उनका यह ख्याल गलत है, जिस होटल में गैर ज़बीहा (झटके का) गोश्त पकता है वह नजिस होता है, उसके बावर्ची खाने के दूसरे सभी खाने भी नजिस हो जाते हैं, लिहाजा मुसलमानों को ऐसे गैर मुस्लिम होटलों में खाना खाना चाहिए जो पूरी तरह शाकाहारी हो। जानवर का गोश्त ज़ब्ह से जब ही हलाल होगा, जब की किसी ईमान वाले ने ज़ब्ह किया हो, और इस्लामी तरीके से ज़ब्ह किया हो, किसी गैर मुस्लिम के ज़ब्ह करने से जानवर का गोश्त हलाल न होगा, चाहे उसने बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर पढ़ कर ज़ब्ह किया हो।

हर जानवर की गरदन में चार रगें होती हैं, एक सांस की, दूसरी खाने की और दो रगें खून की होती हैं, ज़ब्ह करने में इन चारों रगों का काटना ज़रूरी होता है, मालूम रहे कि शरीअ़त ने जिन जानवरों को हलाल किया है, इस का भी लिहाज़ रखा है कि ज़ब्ह में उनको कम से कम तक्लीफ पहुँचे, इसीलिए बताया गया कि छुरी तेज़ हो, अगर चारों रगें तेजी से कट जाएंगी या तीन रगें तो जान आसानी से निकलेगी, अगर सिर्फ दो रगें कटीं या एक रग तो जानवर मर तो जाएगा मगर तक्लीफ ज़ियादा होगी, ज़ब्ह करने में जिस जानवर की सिर्फ दो रगें कटें या एक रग वह जानवर हलाल न हुआ, उसका गोश्त खाना हराम है।

आज कल मुर्गे का गोश्त बेचने वालों का अमल ये है कि मुर्गे की चोंच पकड़ कर लटकाया और उसकी गरदन पर छुरी फेरी, खून बहा, फिर उसको टब में डाल दिया, थोड़ी देर फड़फड़ा कर वह बेजान हो गया। यह जान लेना ज़रूरी है कि अगर उसकी चार रगें या कम से कम तीन रगें कटी हैं तो उसका खाना दुरुस्त है वरना नहीं।

ज़ब्ह करने से पहले छुरी अच्छी तरह तेज़ करलें, फिर जानवर को आसानी से लिटा दें और बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहते हुए उसकी चारों रगें काट दें। जानवर को गिराने के बाद जो लोग उसको पकड़ने में मदद कर रहे हैं बेहतर है कि वह भी बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहें, वह न कहें तो भी कोई हरज नहीं, लेकिन छुरी चलाने वाला अगर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर न कहेगा तो जानवर का गोश्त हलाल न होगा। अगर मौक़ा हो तो जानवर को इस तरह लिटाएं कि उसका मुँह किब्ला की तरफ हो और ज़ब्ह करने वाले का मुँह भी ज़ब्ह करते वक्त किब्ले की तरफ हो। जानवर को इस तरह लिटाएं कि उसकी दुम उत्तर जानिब हो और सिर दक्षिण जानिब,

शेष पृष्ठ .....36 पर

सच्चा शिक्षक समाज का अच्छा मार्गदर्शक

मानव जीवन में शिक्षा और शिक्षकों का बहुत महत्व है। समाज का विकास और उत्थान शिक्षा के बिना संभव नहीं है। मौजूदा दौर में नये–नये ज्ञान–विज्ञान के केन्द्र खुलने से जीवन के नये–नये रहस्य सामने आ रहे हैं और व्यवसाय, व्यापार तथा जीवन व्यतीत करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल के नये–नये तरीके प्रयोग में लाये जा रहे हैं। इसलिए हर इन्सान को उसकी कामयाबी के लिए तरह–तरह का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो गया है, और इस कारण समाज में शिक्षा और शिक्षकों का महत्व भी बढ़ गया है। शिक्षा और शिक्षकों के बढ़ते महत्व ने शिक्षा को व्यापार के रूप में स्थापित कर दिया है। अतः अब पहले की तरह शिक्षा का कार्य मानव समाज, धर्म और आध्यात्म की सेवा कर ईश्वर की प्रसन्नता पाने का ज़रिया नहीं रहा है, तथा धन कमाने का माध्यम बनकर रह गया है जिसका समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

जिस प्रकार मौजूदा दौर में मानव जीवन के हर क्षेत्र में नैतिक पतन का वातावरण है, उसी तरह शिक्षा जगत भी नैतिक पतन और भ्रष्टाचार से ख़ाली नहीं है। हालांकि शिक्षकों, अध्यापकों, गुरुओं, आचार्यों, प्राचार्यों, उस्तादों, पाठशालाओं, स्कूलों, विद्यालयों, गुरुकुलों, मदरसों और मकतबों से मानवता, नैतिकता और सच्चरित्रता के बीज बचपन से आरोपित करके इन्सानों के चरित्र का निर्माण कर उच्चतम मानव मूल्यों और मानदंडों पर आधारित समाज का निर्माण किये जाने की अपेक्षा की जाती है। वे बचपन से ही इन्सान के दिल, दिमाग़ जीवन और चरित्र को प्रभावित करते हैं। किन्तु आज शिक्षा के क्षेत्र में फैला हुआ नैतिक पतन, मानव समाज में नैतिक पतन को बढ़ाने के लिए उत्तरदायी बन गया है। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हमारा समाज भ्रष्ट आचरण और दूषित चरित्र के व्याधियों से पाक हो जाए तो सर्वप्रथम हमें शिक्षक समाज में सुधार का प्रयास करना चाहिए।

समाज के लोगों को ज्ञान सिखाने और पढ़ाने का कार्य बहुत पवित्र कार्य है। ईश्वर के विभिन्न गुणों में एक गुण इन्सानियत को शिक्षित और ज्ञानवान बनाना भी है। ईश्वर हमेशा आदर्श शिक्षक की तरह अपनी सर्वोच्च कृति मनुष्य को सत्यमार्ग पर चलने की शिक्षा और उपदेश देता है।

अंतिम ईश्वरीय ग्रंथ कुर्आन मजीद के अध्ययन से ईश्वर का एक रूप शिक्षक जैसा दिखायी देता है। आदम को उसके वजूद में आते ही ईश्वर ने स्वयं शिक्षक बनकर शिक्षा और ज्ञान देने का कार्य किया था। यह घटना कुर्आन में कई जगह वर्णित की गई है, जिसके अनुसार ईश्वर ने मानव की रचना करने से पहले, उसके बारे में फरिश्तों को बताने पर कि मैं ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाने जा रहा हूँ, फ़रिश्तों ने एक शक ज़ाहिर किया था कि इससे ज़मीन में ख़ूँरेज़ी और फ़साद फैलेगा तो उनकी शंका का समाधान करते हुए ईश्वर ने कहा था कि जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। इसके बाद ईश्वर ने मानव की रचना कर उसे हर चीज़ का ज्ञान सिखाया था।

इससे ज़ाहिर होता है कि मानव जाति का सबसे पहले शिक्षक ईश्वर स्वयं है, जिसने सबसे पहले इन्सान को ज़मीन और आसमान में मौजूद हर चीज का ज्ञान दिया था, इससे यह भी ज़ाहिर होता है

शेष पृष्ठ .....38 पर

इन्सान के नैसर्गिक अधिकार और इस्लाम

—मौलाना जलालुद्दीन उमरी

अधिकारों के संदर्भ में सामाजिक और आर्थिक अधिकारों का बहुत महत्व है। ये उसे अनिवार्य रूप से मिलना चाहिए। सामाजिक और सामुदायिक अधिकारों की अवधारणा यह है कि आदमी समाज और समुदाय में सक्रिय भूमिका निभा सके। यह उसका अधिकार है कि उसे बेकार बनाकर न रख दिया जाये। उस पर ऐसी पाबन्दियां न हों कि वह कुछ न कर सके। इस्लाम में इसकी अवधारणा बिल्कुल स्पष्ट है। इस्लाम विचार और व्यवहार की आज़ादी को मानता है। जो लोग सोच विचार नहीं करते उनके बारे में वह कहता है कि उन्हें क्या हो गया है कि जानवरों की तरह बिना सोचे–समझे ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। वे दुनिया के आरंभ और अंत पर विचार करें और समझें। व्यवहार की भी वह पूरी आज़ादी देता है, सिर्फ़ इस बात की पाबन्दी है कि इन्सान कोई ऐसा क़दम न उठाये जिससे बिगाड़ फैले और समाज को हानि पहुँचे।

पैग़म्बरों के आह्वान का सबसे पहला आधार एकेश्वरवाद (तौहीद) होता था अर्थात यह कि एक मात्र अल्लाह की इबादत करो और फिर वे कहते थे कि अल्लाह ने अपने क़ानून के ज़रिये ज़मीन में सुधार किया है, इसमें बिगाड़ न पैदा करो। अल्लाह ने अपने क़ानून को भलाई और सुधार का ज़रिया बनाया है। इसकी मौजूदगी में बिगाड़ पैदा न करो।

अभिव्यक्ति की आज़ादी इन्सान का एक बुनियादी हक़ है। इस्लाम ने उसे यह अधिकार दिया है। उसके नज़दीक इन्सान के उस हक़ पर अनुचित पाबन्दी नहीं लगनी चाहिए। लेकिन वह उसे इस बात का पाबन्द बनाता है कि अभिव्यक्ति की आज़ादी के नाम पर वह बेहयाई न फैलाये, किसी का दिल न दुखाये, किसी का मज़ाक़ न उड़ाये, किसी की इज़्ज़त और अस्मिता से न खेले और देश और राज्य को खतरे में न डाले और उसके खिलाफ़ साजिश न करे। इन शर्तों के साथ विचार प्रकट करने की आज़ादी है और दुनिया का कोई क़ानून ऐसा नहीं है, जो उस पर इस तरह की पाबन्दी न लगाता हो। यह और बात है कि आज बहुत सारी चीज़ों की गिनती बेहयाई में नहीं है, उसकी इजाज़त दे दी गयी है।

यह भी इन्सान का एक अधिकार समझा जाता है कि उसे घर–परिवार बसाने की इजाज़त हो, क्योंकि परिवार इन्सान की फ़ितरी ज़रूरत है। इस मामले में इस्लाम की शिक्षाएं इतनी स्पष्ट हैं कि इसके स्पष्टीकरण की कुछ भी ज़रूरत नहीं है। वह कहता है कि परिवार खुदा का उपहार और इनाम है। आदमी के बच्चों और संतानों का फैलना विपत्ति या झंझट नहीं बल्कि सौभाग्य का कारण है। परिवार के सिलसिले में इससे बड़ी बात और क्या कही जा सकती है? फिर यह कि उसने परिवार का पूरा सिस्टम दिया है और उसे बनाए रखने की ताकीद की है।

तन्हाई और एकांत को भी इन्सान का एक अधिकार स्वीकार किया गया है। कुर्आन ने न सिर्फ़ यह अधिकार दिया है बल्कि इसकी ताक़ीद की है कि किसी की निजी ज़िन्दगी में हस्तक्षेप न किया जाए, यहां तक कि हुकूमत को भी इसमें हस्तक्षेप का अधिकार नहीं है।

यह भी इन्सान का मौलिक अधिकार स्वीकार किया जाता है, और इस्लाम में यह अधिकार पहले

से मौजूद है कि इन्सान को देश और जाति सेवा का और आलोचना और परिस्थिति में सुधार का अवसर मिलना चाहिए। इस्लाम ने इन्सान को यह अधिकार प्रदान किया है और बताया है कि जो इन्सान देश की सेवा करता है, वह बेहतरीन और आदरणीय इन्सान है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कहा कि ताक़तवर मुसलमान कमज़ोर मुसलमान से बेहतर है क्योंकि ताक़तवर मुसलमान इन्सानों की, समाज और समुदाय की सेवा करेगा। जो कमज़ोर है वह क्या सेवा कर सकेगा। एक अवसर पर आप सल्ल0 ने कहा कि वह मुसलमान जो लोगों से मिलता–जुलता है, उनकी तकलीफ़ों को बर्दाश्त करता है, वह बेहतर है उससे जो न किसी से मिलता है और न तकलीफ़ें बर्दाश्त करता है। क़ुर्आन कहता है कि वह सोसायटी के सुधार, भलाई और कल्याण के लिए काम करे। कपटाचारियों से कहा गया कि तुम्हारी कानाफूसियां तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद नहीं हैं, क्योंकि ये एक तरह की साज़िशें हैं। हां! अगर तुम लोगों की भलाई करने और भलाइयों को फैलाने और बुराइयों को रोकने की बात करो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर होगा और अल्लाह बड़ा प्रतिदान प्रदान करेगा। (क़ुर्आन–4:114)

एक और चीज़ जिसकी आज बड़ी चर्चा है, वह है सुरक्षा। इस बात को तो दुनिया स्वीकार करती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सुरक्षा का अधिकार है। कोई व्यक्ति किसी की जान लेना चाहे, किसी की इज़्ज़त और आबरू पर हमला करे या किसी का माल छीनना चाहे, उसकी जायदाद पर क़ब्ज़ा करना चाहे, उसके घर को आग लगाना और बीवी बच्चों पर हमला करना चाहे, तो ज़ाहिर है वह ख़मोश नहीं बैठेगा। उसकी सुरक्षा करेगा, लेकिन इसमें असावधानी दोनों तरफ़ से होती है। कभी तो यह होता है कि सुरक्षा के नाम पर आदमी उन बातों का ख़याल नहीं रखता, जिनका ख़याल रखना चाहिए और कभी यह होता है कि आतंकवाद और हिंसा के नाम पर आदमी को सुरक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है। इस्लाम की बहुत स्पष्ट अवधारणा मौजूद है कि सुरक्षा कब होना चाहिए और कैसे होना चाहिए, वह किन परिस्थितियों में जायज़ है और किस सीमा तक जायज़ है और कहां सीमाओं का उल्लंघन होता है? ये सभी चीज़ें क़ुर्आन और हदीस में मौजूद हैं और हमारे उलमा और फ़ुक़हा ने भी बड़े विस्तार से इस पर लिखा है। सुरक्षा इन्सान का मौलिक अधिकार है, लेकिन सुरक्षा के नाम पर अगर अत्याचार हो तो यह ग़लत है। यह व्यक्तिगत सुरक्षा की बात है। देश और देश के बीच जो मुक़ाबला होता है, उसकी यहां बहस नहीं है।

किसी लोकतांत्रिक संविधान की एक अनिवार्य विशेषता यह समझी जाती है कि उसमें अल्पसंख्यकों और कमज़ोर वर्गों के लिए सुरक्षा उपलब्ध कराई जाए, उन्हें दूसरों के समान अधिकार दिये जाएं, उनका अधिकार हनन न होने दिया जाए और उन्हें ज़ुल्म–ज़्यादती से बचाने का उपाय किया जाए।

इस्लाम के आने से पहले कमज़ोरों के अधिकार अरब में ही नहीं दुनिया में किसी भी जगह सुरक्षित नहीं थे। उनका बुरी तरह शोषण हो रहा था और उन पर ज़ुल्म–ज़्यादती आख़िरी हद को पहुंच चुकी थी। इस्लाम ने शुरु से उनके हक़ में आवाज़ उठायी और उन पर जो ज़ुल्म–ज़्यादती हो रही थी उस पर कठोर दंड की धमकी दी और दुनिया और आख़िरत में उसके बुरे अंजाम से ख़बरदार किया। उसने औरतों के, अधीनस्थों और शासितों के, बेबसों, बूढ़ों और कमज़ोरों के अधिकार सिर्फ़ बयान ही नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से उपलब्ध किये

और समुदाय तथा समाज को उनके साथ बेहतर से बेहतर आचरण की प्रेरणा दी और सहानुभूति और सहायता की भावना पैदा की।

मानव अधिकारों के ध्वजावाहक धार्मिक स्वतंत्रता को इन्सान का एक अधिकार ठहराते हैं। इस्लाम ने बहुत स्पष्ट शब्दों में इसका ऐलान किया है। कुर्आन कहता है कि अगर अल्लाह चाहता तो सभी लोगों को अपने धर्म का पाबन्द बना देता, कोई उससे बगावत न करता। लेकिन अल्लाह ने धर्म के मामले में उसको आज़ादी दी है और उसकी यह आज़ादी बाक़ी रहनी चाहिए, इसमें उसकी परीक्षा है। हुज़ूर सल्ल0 से कहा गया कि आप सत्य के इन्कारियों के पीछे क्यों पड़े हुए हैं अर्थात आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है कि उन्हें अनिवार्य रूप से सीधे रास्ते पर ले आएं, बल्कि यह अल्लाह का काम है। वह जिसे चाहता है, हिदायत देता है। यह भी बताया कि धर्म के सिलसिले में कोई ज़ोर–ज़बरदस्ती नहीं है। हमारा काम यह स्पष्ट करना था कि हिदायत क्या है, गुमराही क्या है। अब यह आदमी का अधिकार है कि जिसका जी चाहे ईमान लाए और जिसका जी चाहे इन्कार कर दे।

कुर्आन ने कहा है कि धर्म पर बातचीत हो सकती है, लेकिन यह बातचीत शिष्टाचार की सीमा के अन्दर होनी चाहिए। हिदायत है कि धर्म पर बातचीत हो तो सलीक़े और तहज़ीब से हो। इसके लिए ग़लत और अशिष्ट ढंग न अपनाया जाए। हमारे उलमा ने यहां तक लिखा है कि अगर कोई ग़ैर–मुस्लिम, इस्लामी राज्य में खुलेआम यह कहता है कि मैं कुर्आन को अल्लाह की किताब नहीं मानता, मुहम्मद सल्ल0 को अल्लाह का रसूल नहीं स्वीकार करता तो भी इस्लामी हुकूमत उसके ख़िलाफ़ कोई क़दम नहीं उठाएगी। हां! अगर वह बद ज़बानी पर उतर आये तो उसके ख़िलाफ़ कार्रवाई की जाएगी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 की शान में या हज़रत मूसा अलै0, हज़रत ईसा अलै0 या किसी भी पैग़म्बर की शान में गुस्ताख़ी एक दंडनीय अपराध है। ऐसा करने पर इस्लामी राष्ट्र क़त्ल की सज़ा तक दे सकता है। इस तरह किसी भी धर्म के संस्थापक या उसकी सम्मानीय विभूतियों का अनादर, अपमान और उनके सम्बंध में अपशब्द दंडनीय होगा। और क़ानून के अनुसार उस पर दंड दिया जाएगा।

सच्चाई यह है कि अधिकार किसी व्यक्ति या वर्ग को अनिवार्यतः मिलने चाहिएं। इस्लाम वे सभी अधिकार प्रदान करता है और इन्सान की स्वाभाविक अपेक्षाओं (फ़ितरी तक़ाज़ों) की बेहतर ढंग से पूर्ति करता है। सबसे बड़ी बात यह है कि वह दुनिया ही की कामयाबी की नहीं, आख़िरत की कामयाबी और भलाई की भी गारंटी देता है। इसके होते हुए दोनों लोकों (लोक और परलोक) की सफलता के लिए किसी संविधान और किसी जीवन व्यवस्था की ज़रूरत ही बाक़ी नहीं रहती।

❑❑

ज़ब्ह का बयान .....

फिर उस का मुँह क़िब्ला की तरफ़ कर दें, और ज़ब्ह करने वाला उसके पूरब खड़ा हो कर क़िब्ला रुख हो कर ज़ब्ह करे, मगर यह सब ज़रूरी नहीं है, ज़रूरी इतना ही है कि हलाल करने वाला धारदार औज़ार से ज़ब्ह करे, यानी बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर उसकी चार या तीन रगें काट दे।

याद रहे कि ज़ब्ह करने में पूरी गरदन अलग कर देना मकरूह है, लेकिन अगर तेज़ छुरी होने के सबब ग़लती से गरदन अलग हो गई तो कोई हरज नहीं।

❖❖❖

तुर्की में एक नये युग का आरम्भ

—मुहम्मद नफ़ीस खाँ नदवी

तुर्की में 12 जून को हुए संसदीय चुनाव में इस्लाम पसन्द शासकों की जमाअत जस्टिस एण्ड डेवलपमेंट पार्टी (AKP) ने लगातार तीसरी बार कामयाबी हासिल की। इस कामयाबी से दुनिया भर के इस्लाम पसन्द संगठनों और जमाअतों में खुशी की लहर दौड़ गयी, और मुबारक बाद का सिलसिला शुरु हो गया। चुनाव में शानदार जीत के बाद प्रधान मंत्री तैय्यब अर्दगान ने हज़ारों लोगों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा कि ये कामयाबी इस बात की दलील है कि जनता ने नये नागरिक कानूनों को लागू करने का संदेश दे दिया है। अब हम नये कानून की तैयारी और उसको लागू करने के लिए सभी जमाअतों को लेकर चलेंगे और सभी निर्णय आपसी सहमति से और जनता के हित को सामने रख कर किये जाएंगे।

जस्टिरा पार्टी की ज़बरदस्त कामयाबी के कारणों के विभिन्न पहलुओं का निरीक्षण किया जा रहा है। जिनमें सबसे ऊपर पार्टी की समाजी व आर्थिक पॉलिसियाँ और जनता की सहूलतें हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इस पार्टी के शासन में आने के बाद बेरोज़गारी की दर कम होते हुए केवल दस प्रतिशत बची है। 2007 ई0 से 2011 ई0 तक देश की पैदावार में 9 प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी हुई है। ये दर चीन के बाद दुनिया के दूसरे 20 देशों में दूसरे नम्बर पर थी। तथ्यों से हट कर इस समय तुर्की और तुर्क जनता मज़बूती, उन्नति और खुशहाली के ऐसे मार्ग पर अग्रसर है जिस पर वे गर्व कर सकते हैं।

मुस्तफा कमाल पाशा ने तुर्की को इस्लामी विरासत से काट कर एक धर्म निरपेक्ष देश के रूप में पेश किया था। 1938 ई0 में जब कि मुस्तफा कमाल पाशा का इन्तिकाल हो गया, मगर उसके जानशीनों ने हमेशा तुर्की को एक धर्मनिरपेक्ष देश की हैसियत से परिचित कराया है। इसके बावजूद सन् 1960 ई0 से सन् 1980 ई0 के बीच तुर्की की चार फौजी बगावतें हुईं जिनके परिणाम में जनता के चुने हुए शासन को एक तरफ कर दिया गया। इसी तरह सन् 1980 ई0 से तुर्की गणतन्त्र के नाम पर फ़ौजी तानाशाही के साये में था, 2002 ई0 में तुर्की ने एक इन्क़लाबी करवट ली, जब तैय्यब अर्दगान की इस्लाम पसन्द पार्टी का शासन प्राप्त हुआ। और धीरे–धीरे स्थिति में बदलाव आना शुरु हुआ। इस महत्वपूर्ण बदलाव का ही नतीजा है कि तुर्क जनता ने जस्टिरा पार्टी को धर्म निरपेक्षता के मुक़बले इस्लामी कानूनो की तरफ़दारी पर वोट दिया। उन्होंने सेक्यूलरिज़्म या कमालिज़्म और फौजी शासन से निजात के लिए इस्लाम और इस्लाम पसन्दों को चुना। इसलिए ये कहना बेजा न होगा कि बीते दस बरसों में तुर्की में इस्लामी कानून व शासन और इस्लामी रिवायतों में बढ़ोत्तरी हुई है, ये एक कौमी तब्दीली की ओर अच्छा क़दम है।

जस्टिस पार्टी की कामयाबी का एक महत्वपूर्ण कारण साफ़ सुथरा शासन भी है। इस पार्टी ने दुनिया के सामने ये नमूना भी पेश किया कि इस्लाम पसन्द शासन दस साल अधिपत्य में रहते हुए भी हर प्रकार की बदउन्वानी

से पाक है। दूसरी मुस्लिम हुकूमत हो या पश्चिमी शासन, आज वहां जिस तरह से सियासी लोग आर्थिक व सेक्स स्केन्डल्स में लिप्त हैं, उनके लिए तुर्की का ये साफ़ सुथरा शासन न केवल एक चैलेन्ज है बल्कि वहां की जनता के लिए एक पैग़ाम भी है।

तुर्की में इस्लाम पसन्द पार्टी की कामयाबी में जहां आन्तरिक कारण कार्यरत हैं वहीं बाहरी और अन्तर्राष्ट्रीय कारणों को भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तुर्की की हुकूमत ने एक बावक़ार और मज़बूत इस्लाम पसन्द शासन की मिसाल पेश की है, जिसके गहरे प्रभाव को पश्चिमी देशों ने बड़ी सन्जीदगी से महसूस किया, इसमें सबसे महत्वपूर्ण संसद का वो निर्णय है जिसमें उसने अमरीका को ईराक़ के ख़िलाफ़ फ़ौजी कार्यवाही करने के लिए किसी भी क़ीमत पर अपनी ज़मीन देने से इन्कार कर दिया था।

जनवरी 2009 ई0 में जब ग़ज़्ज़ा पर इस्राईल के वहशियाना और ज़ालिमाना हमले जारी थे और मुस्लिम शासक बयानबाज़ियों में व्यस्त थे। उस समय डेविस में 'वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम' का आयोजन हुआ, जहां तुर्की के प्रधानमंत्री तैय्यब अर्दगान ने इस्राईली नुमाइन्दे शमऊन पीरेज़ की कड़ी आलोचना करते हुए फ़ोरम का बायकाट किया। जिससे एक हौसला देने वाला संदेश मुस्लिम उम्मत के सामने आया।

जुलाई 2009 ई0 में 'फ्रीडम फ्लोटेला' का वाकिआ पेश आया, इस जहाज़ी इमदादी काफ़िला में तुर्की का एक जहाज़ भी शामिल था जो मज़लूम फ़िलिस्तीनियों के लिए दवा, कपड़े और दूसरी ज़रूरी चीज़ें लेकर जा रहा था। इस्राइली कमॉन्डरों ने उस काफ़िले को निशाना बनाया जिसमें तुर्की के भी बहुत से लोग मारे गये थे। और तब तैय्यब अर्दगान ने वाकिए की कड़ी निन्दा की और फ़ौरन इस्राइल से अपने राजनीतिक सम्बन्ध समाप्त करने की घोषण कर उस वाकिए की मिसाल नाइन्थ एलेवेन से दी। ध्यान रहे कि तुर्की और इस्राईल के बीच बेहतरीन व्यापारिक, राजनीतिक और फ़ौजी संबंध स्थापित थे।

ये वो आन्तरिक व बाहरी कारण हैं जिनके परिणाम में अर्दगान की पार्टी दस साल से शासन में है, और अब उसकी वर्तमान की सफलता के बाद सियासी पन्डित इस बात का अन्दाज़ा लगा रहे हैं कि तुर्की में बढ़ते इस्लामी ग़लबे के परिणाम में सेक्यूलर दृष्टिकोण व विचार धुंधले पड़ते जा रहे हैं और तुर्की आने वाले कुछ समय में क्रन्तिकारी देश के रूप में उभर कर सामने आयेगा और दुनिया के नक़्शे को ही बदल देगा।

❑❑

सच्चा शिक्षक समाज.....

कि शिक्षा देना और शिक्षक होना कितना महान, पवित्र और महत्वपूर्ण कार्य है। हालांकि ईश्वर ने मनुष्यों को सिर्फ़ कायनात में मौजूद वस्तुओं का भौतिक ज्ञान ही नहीं दिया बल्कि उन्हें ज़िन्दगी जीने का सही रास्ता भी दिखाया। मानवता को उसने एक ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने की शिक्षा दी जिस पर अमल कर वह एक ऐसी आदर्श और संतुलित ज़िन्दगी गुज़ार सकता है जिसके ज़रिए उसका दुनिया में जन्म लेना सार्थक हो। ईश्वरीय शिक्षाओं के माध्यम से एक मनुष्य इस लोक में भी सफल ज़िन्दगी गुज़ार सकता है और परलोक में भी सफलता प्राप्त कर सकता है।

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 गुईद अशरफ़ नदवी

बढ़ रही है सीनियर सिटिजन की आबादी– देश में सीनियर सिटिजन (60 या इससे अधिक उम्र वाले) की संख्या तेजी से बढ़ रही है, और कामकाजी उम्र (15 से 59) वालों का सीनियर सिटिजन की तुलना में अनुपात घटता जा रहा है। कामकाजी उम्र के भीतर भी औसत उम्र बढ़ने का ट्रेन्ड है। आबादी के आँकडों का रुख़ बताता है कि देश में 60 वर्ष से ज़्यादा उम्र वालों की आबादी 2001 की तुलना में 2026 तक दोगुनी हो जाएगी। केन्द्र सरकार की एक रिपोर्ट बताती है कि सन् 2026 तक दक्षिण भारत की तुलना में उत्तर भारत ज़्यादा जवान होगा। 2026 तक केरल में सर्वाधिक शिक्षित कामकाजी आबादी हो जाएगी और इस राज्य की आबादी की औसत उम्र होगी 35 वर्ष। वहीं उ0प्र0 में अशिक्षित या कम शिक्षित कामकाजी वर्क फोर्स सबसे ज़्यादा होगी और इसकी औसत आयु 30 वर्ष होगी। उ0प्र0 में कुल आबादी में वृद्ध करीब 7 फीसदी से ज़्यादा हैं, जबकि केरल में सबसे ज़्यादा 10.5 फीसदी हैं उ0प्र0 में 13.4 फीसदी वृद्ध दूसरों पर आश्रित हैं।

भारत के 20 खरब रूपए का कर्जदार है अमेरिका– भारत ने अमेरिका को फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया से भी ज़यादा कर्ज दे रखा है, जो करीब 41 अरब डॉलर रूपए यानी करीब 20 खरब रूपए है। यह कर्ज़ अमेरिका की प्रतिभूतियों की खरीद के रूप में हैं। भारत के लिए यह कर्ज़ अब चिंता का सबब बन गया है, क्योंकि अमेरिका फिर आर्थिक संकट के दौर से गुज़र रहा है। हालात और बिगड़ते हैं तो इससे भारत भी अछूता नहीं रहेगा।

अमेरिका के लिए भारत का कर्ज उसके सकल घरेलू उत्पाद का बहुत छोटा सा हिस्सा है। ऐसे में उसे भारत की बजाय अन्य देशों का कर्ज चुकाने की चिंता है। इस बीच अमेरिका सरकार की वित्तीय शाखा का स्तर घटाने के कारण क्रेडिट रेटिंग एजेंसी स्टैंडर्ड एवं पूअर्स की खूब आलोचना हो रही है।

एक जुर्म पर दो तरह के फैसले पर उठे सवाल– एक तरह के जुर्म में फैसला दो तरह का? अगर मालेगांव धमाके के आरोपितों को जमानत दी जा सकती है तो फिर आतंकी होने के शक से मुस्लिम युवकों को जेल में क्यों रखा गया? ऐसे ही सवालों के आइने में मालेगांव धमाके, न्यायिक साम्प्रदायिकता और इंडियन मुजाहिदीन पर हुई गोष्ठी में बुद्धिजीवियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। मुम्बई की एक अदालत ने मालेगांव धमाकों के दो आरोपितों को यह कर जमानत दे दी कि वे सिर्फ षडयंत्र से वाकिफ थे। इंडियन मुजाहिदीन राज्य प्रायोजित कागजी संगठन है, इस पर भी लगातार बहसें जारी हैं। प्रो0 रूपरेखा वर्मा ने भी एक तरह के जुर्म के लिए दो तरह के फैसले पर सवाल उठाया। हाईकोर्ट के अधिवक्ता मो0 शुएब, वेलफेयर पार्टी ऑफ इंडिया के चेयरमैन मुजतबा फारूक ने कहा कि सरकारें और निचली अदालतों का रवैया अक्सर भेदभावपूर्ण रहता है।

Phone: 0522-2267429 (S) 2260671 (R)

MOHD. MIYAN JEWELLERS

एक भरोसेमन्द सोने, चान्दी के ज़ेवरात की दुकान

1-2, Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

Phone: 9415087427

अनस मैरेज हाल

बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हम से सम्पर्क करें

कपूर मार्केट (मलिक मार्केट) विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

Shop : 2266408
Residence: 2260884

IQBAL & CO.

Deals :
Friend Embroidery Machine
Deals in :
Embroidery Raw Materials
& Spare Parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala
Police Chowki, Chowk, Lucknow-226063

HAJI SAFIULLAH & SONS Jelwellers

Mohd. Aslam
Phone : 0522-4028050, 2268845
Mobile : 9454586265, 9839654567
9335913718

Nagina Market, Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad, Lucknow